SACHCHA RAHI • ISSN 2582-4007 • VOL 21 • ISSUE 01 • MARCH 2022

हिन्दी मासिक

मार्च 2022

सच्चा राही

लखनऊ

सामाजिक एवं साहित्यिक

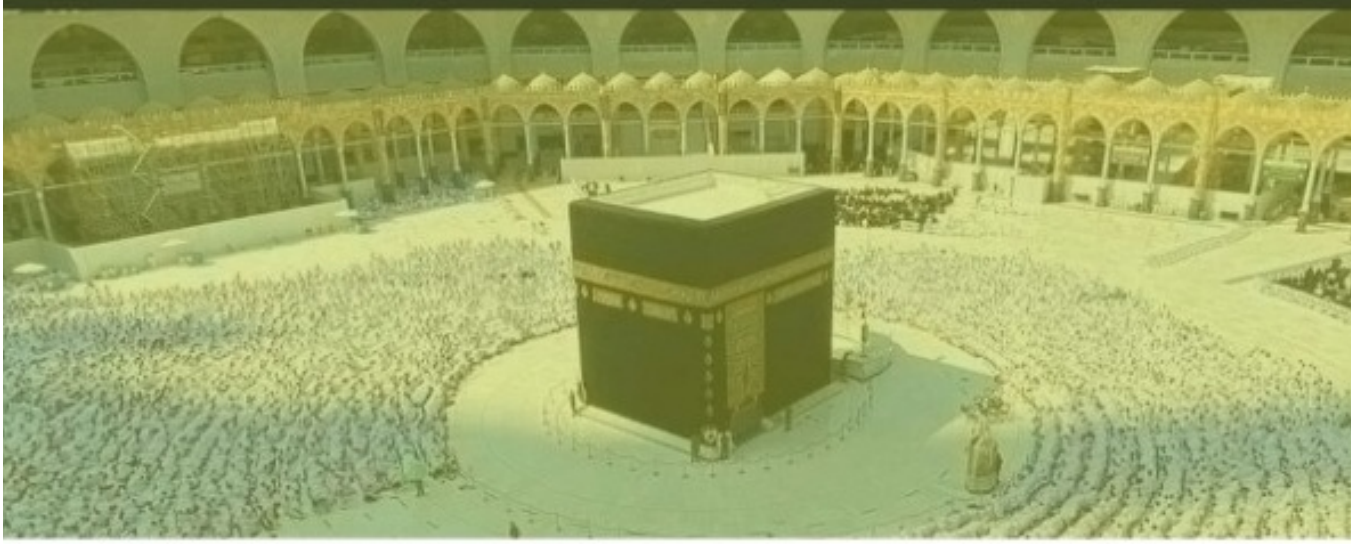

मोमिन पूजे केवल रब को पापों से वह दूर रहे
पापों से वह दूर रहे और भले काम वह खूब करे
यह जीवन है थोड़े दिन का इस को ना बेकार करे
करे काम वह उन्नति वाले जन सेवा भी खूब करे

एक प्रति ₹ 30/=

वार्षिक ₹ 300/=

सरपरस्त
हज़रत मौलाना सै० मुहम्मद राबे हसनी नदवी
नाज़िम नदवतुल उलमा, लखनऊ

सम्पादक
मु0 गुफ़रान नदवी
उप सम्पादक
जमाल अहमद नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
☎ 0522–2740406 (8:00 am to 1:00 pm)
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com
http://sachcha-rahi.nadwa.in/
www.nadwatululema.org

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक)	50 युएस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ
SACHCHA RAHI.ISSN 2582-4007

मार्च, 2022 वर्ष 21 अंक 01

कुर्आन और पर्दा

ऐ नबी! अपनी बीवियों और बेटियों और मुसलमानों की औरतों से कह दो कि अपने ऊपर अपनी चादरों के घूँघट डाल लिया करें, इससे उम्मीद की जाती है, कि वह पहचानी जाएंगी और उनको सताया न जाएगा, अल्लाह बड़ा मॉफ़ करने वाला और बहुत ही दयावान है।

(सूरः अहज़ाब–59)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Composing by: Qamaruzzama-9452295052

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0	07
इस्लाम धर्म	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	09
इन्सानी समाज के तीन घातक रोग	हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	11
भारत के अतीत में मुस्लिम शासकों	सैय्यद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान	14
कहना बड़ों का मानो	ख्वाजा अल्ताफ़ हुसैन ह़ाली रह0	17
इस्लामी अक़ीदे	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	18
ईमान व अमल और उनकी	डॉ0 सईदुर्रहमान आजमी नदवी	20
देश में नफरत का माहौल!	जमाल अहमद नदवी	23
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	27
एलाने मिलकियत	इदारा	28
सच्चा राही का इक्कीसवाँ वर्ष	सम्पादक	29
अमानत	नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	30
घरेलू मसायल	मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन संभली रह0	31
कामयाबी का रास्ता	डॉ0 सैय्यद अबूज़र कमालुद्दीन	34
ऐकता का संदेष्टा	अल्लामा सैय्यद सुलैमान नदवी रह0	37
हमारे वालिद साहब	अतिया सिद्दीक़ा	40
उर्दू सीखिए	इदारा	41
अपील बराए तामीर स्टॉफ क्वाटर्स	इदारा	42

क़ुअनि की शिक्षा

मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़ई हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-तौबाः-

अनुवाद–

फिर अल्लाह उसके बाद जिसे चाहे तौबा नसीब करे और अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला बड़ा ही दयालु है[1](27) ऐ ईमान वालो! शिर्क करने वाले सबके सब अपवित्र हैं बस वे इस वर्ष के बाद मस्जिदे हराम के निकट न आने पायें और अगर तुम्हें गरीबी का डर है तो अल्लाह ने अगर चाहा तो जल्द ही तुम्हें अपनी कृपा से धनी कर देगा निः संदेह अल्लाह ख़ूब जानता हिकमत वाला है[2](28) अहले किताब में से उन लोगों से जंग करो जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं लाते और अल्लाह और उसके पैग़म्बर की हराम की हुई चीज़ों को हराम नहीं जानते[3] न सही धर्म स्वीकार करते हैं यहां तक कि वे अपने हाथ से जिज़्या दें इस हाल में कि वे बे हैसियत हों[4](29) यहूदी बोले कि उज़ैर अल्लाह के बेटे हैं और ईसाई बोले कि मसीह अल्लाह के बेटे हैं, यह उनके मुँह की बड़ है वे उन लोगों की बात से भी आगे बढ़ जाना चाहते हैं जिन्होंने उनसे पहले कुफ़्र किया, अल्लाह उन्हें बर्बाद करे, यह कहाँ भटके फिर रहे हैं(30) उन्होंने अपने उलमा (धर्म ज्ञाताओं) और बुजुर्गों को और ईसा पुत्र मरियम को अल्लाह के अलावा पालनहार बना लिया जब कि उनको केवल यह आदेश था कि वे एक ख़ुदा की उपासना करें जिसके सिवा कोई उपास्य (माबूद) नहीं उनके हर प्रकार के शिर्क से वह पवित्र है[5](31) वे चाहते हैं कि अपनी फूँकों से अल्लाह की रौशनी को बुझा दें जब कि अल्लाह अपनी रौशनी पूरी करके रहेगा, चाहे काफ़िरों को कैसा ही बुरा लगे(32) वही वह ज़ात है जिसने अपने पैग़म्बर को हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा ताकि उसको हर दीन पर ग़ालिब कर दे चाहे शिर्क करने वालों पर कैसा ही भारी हो[6](33) ऐ ईमान वालो! यहूदी (विद्वानों) और (ईसाई) संतों में बेशक बहुत से ऐसे हैं जो नाहक लोगों के माल खाते हैं और अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं और जो लोग भी सोना और चाँदी इकट्ठा करके रखते हैं और अल्लाह के रास्ते में उसको खर्च नहीं करते उनको दुखद अज़ाब की खुशख़बरी दे दीजिए(34) जिस दिन उसको दोज़ख की आग में तपाया जाएगा फिर उससे उनके माथों और उनके पहलुओं और उनकी पीठों को दाग़ा जाएगा, यही है ना जो तुमने इकट्ठा करके रखा था, बस जो भी तुम जमा कर के रखते थे, अब उसका मज़ा चखो[7](35) निःसंदेह महीनों की संख्या अल्लाह के यहां अल्लाह की किताब में, जिस दिन से उसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया बारह ही है, उनमें चार आदर वाले हैं, यही ठीक–ठीक दीन है, तो उनमें अपने साथ अन्याय न करो और सब मुश्रिकों से लड़ो जैसे वे सब तुम से लड़ते हैं और जान लो कि अल्लाह परहेज़गारों के साथ है[8](36)

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. अतः अल्लाह ने कबीला हवाज़िन वगैरह को उसके बाद ईमान की दौलत से सम्मानित किया खुद मालिक बिन औफ़ जो हवाज़िन क़बीले के सबसे बड़े सरदार थे मुसलमान हुए और इस्लाम के बड़े पेशवाओं में उनकी गिन्ती होती है।

2. मक्का विजय के बाद हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐलान कर दिया कि आगे कोई मुश्रिक या काफ़िर मस्जिद–ए–हराम में बल्कि हरम की सीमा में प्रवेश न करे, इसलिए कि उनके दिल इतने ज़्यादा अपवित्र हैं कि वे इन पवित्र स्थलों में प्रवेश करने के योग्य नहीं, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जज़ीरतुल अरब से उनके निकाले जाने का आदेश दिया जो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के युग में पूरा हुआ, इस आदेश से लोगों को खयाल हुआ कि जब लोगों का आना जाना बन्द हो जाएगा तो आय के स्रोत भी कम हो जाएंगे, अल्लाह तआला ने फरमाया कि आगे अल्लाह तुम्हें खूब नवाज़ने वाला है।

3. इससे पैग़म्बरी के मक़ाम की महानता का बोध होता है कि रसूल का हराम करना भी अल्लाह के हराम करने की तरह है।

4. अहले किताब की शक्ति तोड़ने का भी आदेश हुआ, हाँ उनके लिए उस समय यह अनुमति दी गई कि वे प्रजा बन कर जिज़्या दे कर रहना चाहें तो रह सकते हैं, बाद में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम' ने जज़ीरतुल अरब (अरब प्रायद्वीप) को पूर्ण रूप से पाक करने का आदेश दिया, आगे अहले किताब की खुली गुमराहियों और शिर्क का उल्लेख है कि वे शिर्क में पहले के मुश्रिकों से भी आगे बढ़ जाना चाहते हैं, यहूदियों ने हज़रत उज़ैर को ख़ुदा का बेटा बताया और ईसाईयों ने हज़रत ईसा को खुदाई में साझी ठहराया और अपने धर्म ज्ञाताओं और संतों को भी खुदाई का दर्जा दे दिया कि उनकी बे दलील बातें भी बड़ी सरलता से मानने लगे।

5. अहले किताब अपने उलमा को धार्मिक क़ानून बनाने वाले की हैसियत देते थे और समझते थे कि वे जो कह दें चाहे वह अल्लाह की किताब के अनूकूल हो या न हो मानना ज़रूरी है, इस पर सख़्त पकड़ की जा रही है इस उम्मत के उलमा और इमाम लोगों ने धर्म की जो व्याख्या और अनुवाद किया है वह दीन की बड़ी सेवा है और उनकी बात मानना आम लोगों पर अनिवार्य है जो जानते नहीं, इसलिए कि अल्लाह का कहना है ''अगर तुम नहीं जानते तो याद रखने वालों से पूछ लो'' यह उलमा व इमाम लोग अपनी ओर से कुछ नहीं कहते वे मात्र कुर्आन व हदीस के प्रवक्ता (व्याख्याकार) हैं।

6. अल्लाह ने दीन के सूरज को बुलन्द किया और दुश्मन ऐंठ कर रह गए।

7. जो लोग भी माल इकट्ठा करते हैं और उसके आवश्यक हक़ अदा नहीं करते, ज़कात नहीं निकालते उनके लिए यह वईद (धमकी) है, अब ज़ाहिर है जो उलमा (धर्मज्ञाता) ब्याज व रिश्वत ले कर आदेश बताया करते थे उनके बारे में बात साफ़ हो गई कि उन्होंने अपने लिए कैसा आग का ईंधन इकट्ठा कर रखा है।

शेष पृष्ठ...39...पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौ0 हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0

अनुचित और हद से बढ़ी हुई तारीफ पर रोकः—

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा हज़रत उमर (रज़ि0) से रिवायत करते हुए कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल0 को फरमाते हुए सुना है कि मेरी हद से बढ़ी हुई तारीफ न करना जैसे कि ईसाइयों ने हज़रत ईसा बिन मरयम अलै0 की अनुचित और हद से बढ़ी हुई तारीफ की, मैं तो उसका बन्दा हूँ, तो तुम भी (मुझे) अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल कहो।

(बुखारी)

व्याख्याः— *ईसाइयों ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के चमत्कार देख कर यह कहना शुरु कर दिया कि वे अल्लाह के बेटे हैं, कुछ ने कहा— अल्लाह उनके रूप में आ गया है, और अधिकतर ने तसलीस (टिरीनीटी) की आस्था अपना ली, इसी तरह की आस्थाएं अगर अल्लाह के रसूल सल्ल0 के बारे में रखे तो मुश्रिक (अल्लाह के साथ दूसरे को शरीक ठहराने वाला) हो जाएगा, या यह कहे कि आप आलिमुलग़ैब है, हाज़िर व नाज़िर (हर जगह मौजूद और सब पर आपकी नज़र है) और मुख़्तारे कुल हैं (जो चाहें कर सकते हैं) यह सब ही शिर्क की बातें हैं।*

बन्दा और बन्दी का सम्बन्ध केवल अल्लाह ही से जोड़ा जा सकता हैः—

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः— तुम में कोई आदमी कदापि न कहे— मेरा बन्दा, मेरी बन्दी। (इसलिए कि तुम सब अल्लाह के बन्दे हो, और तुम्हारी सब औरतें अल्लाह तआला की बन्दियाँ हैं, लेकिन चाहिए कि वह यूं कहे— मेरा गुलाम, मेरी बाँदी, मेरे नौजवान मर्द और मेरी नौजवान औरत, (मेरे लड़के, मेरी लड़की) और गुलाम (अपने आका को) मेरा रब न कहे, उसको चाहिए कि वह ये कहे, मेरे आका, और मेरे मौला। और एक हदीस में है कि गुलाम ''मौला'' भी न कहे इसलिए कि तुम्हारा मौला अल्लाह है। (मुस्लिम)

क़सम केवल अल्लाह की खाई जाएः—

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह ने तुमको बाप—दादा की क़सम खाने से मना फ़रमाया है, जिसको क़सम खाना हो वह अल्लाह की क़सम खाए वरना खामोश रहे।

(बुखारी व मुस्लिम)

नफ़ा व नुकसान का मालिक केवल अल्लाह हैः—

हज़रत आबिस बिन रबीअः से रिवायत है कि मैंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा, वह हजरे अस्वद चूम रहे थे और कह रहे थे कि मैं जानता

हूँ कि तू पत्थर है, न लाभ पहुँचा सकता है न हानि, अगर मैं रसूलुल्लाह सल्ल0 को चूमते न देखता तो मैं भी न चूमता।

(बुखारी व मुस्लिम)

व्याख्याः— *हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उम्मत को अकीदा और आस्था की खराबी से बचाने तथा सुरक्षित रखने के लिए जहाँ–जहाँ अनुचित श्रद्धा तथा पवित्रता पैदा होने का खतरा था उसका इलाज कर दिया, यहाँ हजरे अस्वद को सम्बोधित करते हुए साफ़ कर दिया कि नफ़ा व नुकसान केवल अल्लाह के हाथ में है। दूसरी तरफ़ बैअते रिज़वान (एक मुआहदा) जिस पेड़ के नीचे हुई थी उसको भी कटवा दिया ताकि बाद में चल कर इस पेड़ से कोई अनुचित आस्था और श्रद्धा न पैदा हो जाए।*

मकबूल अमल (स्वीकृत कर्म) का नाता मुसीबत से छुटकारा देता हैः–

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फरमाते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फरमाते हुए सुना कि तुम से पहले तीन आदमी कहीं गये, रास्ते में शाम हो गई, उन्होंने एक गुफा में पनाह ली, जब वो उसके अन्दर घुसे तो गुफा के मुँह पर (ऊपर से) एक पत्थर गिर पड़ा और वह बन्द हो गया, उन लोगों ने कहा इस पत्थर से कोई छुटकारा नहीं दे सकता, हाँ अल्लाह को अपने किसी अमल की याद दिलाते हुए पुकारो, (हो सकता है कि हम से यह मुसीबत दूर हो जाए) उनमें से एक ने कहा ऐ अल्लाह! मेरे माँ–बाप बूढ़े थे, और मैं उन से पहले अपनी बीवी बच्चों को दूध नहीं पिलाता था, एक दिन मैं चारे की तलाश में दूर तक निकल गया, रास्ते में मुझको शाम हो गई, जब घर लौटा तो उनको सोता हुआ पाया, मैंने बुरा समझा कि उनको जगा कर दुःख दूँ, या उनसे पहले बीवी बच्चों को दूध पिलाऊँ, मैं दूध की कटोरी अपने हाथ में लेकर उनके जागने का इन्तिज़ार करने लगा यहाँ तक कि सुबह हो गई और बच्चे मेरे पैरों पर लोट रहे थे (जब मेरे वो बूढ़े माँ–बाप जग गए तो) मैंने उनको दूध पिलाया। ऐ अल्लाह! अगर यह काम मैंन तेरी खुशी के लिए किया है तो इस पत्थर को हम से दूर कर, तो पत्थर थोड़ा सा हट गया।

दूसरे ने कहाः ऐ अल्लाह! मेरे एक चचा की लड़की थी वह मुझको बहुत पसन्द थी, एक हदीस में है कि मैं उसको इतना चाहता था जितना कि किसी मर्द को किसी औरत से महब्बत हो सकती है, एक दिन मैंने उसे बुलाया तो उसने इन्कार कर दिया, यहाँ तक कि कहत (अकाल) से परेशान हो कर वह मेरे पास आई, मैंने उसको इस शर्त पर 120 दीनार दिये कि वह मुझसे एकान्त में मिले, वह राज़ी हो गई, जब मैंने इच्छा की तो उसने कहाः अल्लाह से डर और बिना अधिकार मेरी इज्ज़त–सम्मान पर हाथ मत रख। मैं यह सुन कर रुक गया, जब कि मैं उसको बहुत चाहता था, फिर मैंने उस से रूपये भी वापस नहीं लिए। ऐ अल्लाह! अगर मैंने

शेष पृष्ठ...39...पर

सम्पादकीय

इस्लाम धर्म

मुहम्मद गुफ़रान नदवी

समस्त संसार को बनाने वाला और उसके पालनहार अल्लाह ने इन्सान के जीवन यापन के लिए आकाश, धरती, समुद्र, पहाड़, सूर्य चन्द्रमा बनाये ताकि इन सबके सहयोग से ज़मीन से ग़ल्ला उगे, पेड़ों से फल फूल, मेवेजात मिलें इसी जीवन व्यवस्था को सुधारने के लिए अल्लाह ने धर्म बनाया, जिस धर्म को अल्लाह ने अपने बन्दों के लिए पसन्द फ़रमाया वह धर्म इस्लाम है, सूरः आले इमरान आयत नं0 19 में फ़रमाया बेशक अल्लाह के नज़दीक ''दीन'' इस्लाम ही है, इस्लाम वही दीन है, जिसकी दावत व तअ़लीम हर पैगम्बर अपने अपने ज़माने में देते रहे हैं, पैगम्बरों की यह श्रृंखला तमाम इन्सानों के बाप हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से प्रारम्भ हो कर अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल0 पर समाप्त होती है, पैगम्बरों की संख्या एक लाख चौबीस हज़ार है, ऐसी सूरत में इसके सत्य होने में कोई सन्देह नहीं, दीन व दुनिया (लोक प्रलोक) की सफलता इसी में है। दुनिया के स्वामी व मालिक ने इन्सानों के लिए जो दीन पसन्द फ़रमाया उसकी इत्तिला व ख़बर अपने नबियों और पैगम्बरों द्वारा दी, हर नबी ने अपनी क़ौम को इस्लाम ही की दअ़वत दी, अल्लाह के आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल0 पर दीन मुकम्मल हो गया, जिसके मुकम्मल होने का ऐलान हज्जतुलवदाअ़ के मौक़े पर सन् 10 हिजरी में हुआ, ''आज मैंने तुम्हारे लिए दीन को पूरा कर दिया और तुम पर अपना इनआ़म पूरा कर दिया, और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन के रूप में पसंद कर लिया।

(अल–माइदा–आयत नं0 3)

इस मौलिक आदेश के बाद कि इन्सानों के लिए इस्लाम ही केवल दीन है, यह इतना पक्का और सच्चा है, कि इसको छोड़ कर किसी दूसरे मार्ग पर जाना अपने को तबाही और बरबादी में डालना है, सबसे बड़ी बात अपने पालनहार और सृष्टा के आदेश की अवज्ञा है, जो दण्डनीय है, दीने इस्लाम को छोड़ कर जो लोग दूसरे मार्ग पर जा रहे हैं उनके लिए कठोर शब्दों में चेतावनी है, सूरः आले इमरान की आयन नं0 85 में अल्लाह तआला फ़रमाता है ''जो व्यक्ति इस्लाम के अतिरिक्त और दीन तलाश करे उसका दीन स्वीकार न किया जायेगा और वह आखिरत में नुक़सान पाने वालों में होगा'', इस्लाम के शाब्दिक अर्थ, आज्ञापालन और आदेश पालन के हैं, और परिभाषा में विशेष रूप में उस दीन के आज्ञा पालन का नाम ''इस्लाम'' है जो अल्लाह तआला ने अपने पैगम्बरों द्वारा इन्सानों की हिदायत के लिए भेजा है, क्योंकि दीन के सिद्धान्त तमाम नबियों की शरीअतों में एक ही हैं। पूरे जगत के सृष्टा और स्वामी अल्लाह ने अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को पूर्ण रूप से दुनिया के सामने स्पष्ट कर दिया, अन्तिम नबी पर अल्लाह ने अपनी अन्तिम किताब कुरआन शरीफ़ उतारी जिसमें इस्लाम के समस्त आदेश और शिक्षायें मौजूद हैं, कुरआन, मानव जीवन के लिए एक मार्ग दर्शन है, जिसमें इन्सान की तमाम

आवश्यकताओं और भावनाओं का लिहाज़ रखा गया है, बिला शुबहा हर दौर और हर ज़माने में अल्लाह ने इन्सानों की हिदायत और मार्ग दर्शन के लिए कोई न कोई नबी या रसूल ज़रूर भेजा जिस की पुष्टि कुर्आन मजीद की इस आयत ''वली कुल्लि क़ौमिनहाद'' में होती है, लेकिन अन्तर यह है कि पिछले नबी या रसूल जो आये वह अपने ज़माने, अपने इलाक़े, अपनी क़ौम के लिए विशेष और ख़ास थे, उनके जाने के बाद दूसरा नबी आ जाता था, यह सिलसिला हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तक चला, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बाद 6 सौ साल ऐसे गुज़रे कि दुनिया में इन्सानों की हिदायत के लिए अल्लाह का कोई नबी व रसूल नहीं आया जिसकी वजह से दुनिया पापों से भर गई, और मानवता तबाही के कगार पर आ गई, अल्लाह की रहमत जोश में आई और इन्सानियत के काफ़िले को जो आत्महत्या पर तैयार था बचा लिया गया। अल्लाह ने अपने अन्तिम नबी और आखिरी रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मक्के की सरज़मीन पर भेजा जिसकी नबूवत व रिसालत सारे जहान के लिए थी, यह संसार जो पाँच बड़े महाद्वीपों पर आधारित है उनमें बसने वाली आम जनमानस के लिए हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हादी व रहबर हैं। आपके बाद क़यामत तक कोई दूसरा नबी व रसूल नहीं आयेगा, मुहम्मद सल्ल0 का मुक़ाम व मरतबा इतना बलन्द है कि सैकड़ों साल से आसमानी किताबों में आप सल्ल0 के आने की ख़बरें दुनिया वालों को दी जा रही थीं, मानव इतिहास में सामूहिक रूप से इतना बड़ा इनक़िलाब और बदलाव नहीं आया जो मुहम्मद सल्ल0 की नबवी दअ़वत व तालीम के नतीजे में आया। अल्लाह तआला ने आप सल्ल0 की ज़बान मुबारक से यह कहलवाया ''इन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम जमीआ'' ऐ ज़मीन पर रहने वाले इन्सानों! मैं तुम सब की तरफ़ नबी बना कर भेजा गया हूँ'' मुहम्मद सल्ल0 का यह संबोधन अरब और ग़ैर अरब सभी के लिए है।

अल्लाह तआला अपने को ''रब्बुल आलमीन कहता है'' जिसका अर्थ है कि अल्लाह पूरे जगत और राष्ट्र, हर देश, हर जाति विरादरी और सब का पालनहार है, इसी प्रकार अल्लाह ने अपने अन्तिम और प्रिय नबी को ''रहमतुल लिलआलमीन'' फ़रमाया, सूरः अम्बिया आयत नं0 107 ''ऐ नबी सल्ल0 हम ने आपको तमाम जहानों के लिए रहमत (करुणा और दया) बना कर भेजा है, दो प्रकार से नबी करीम सल्ल0 करुणा और दया थे एक तो आप सल्ल0 अपने चरित्र, नैतिकता, और स्वभाव की वजह से, दूसरे यह कि जिस दीन की आप दावत देते हैं उसके अपनाने से दुनिया में शान्ति का माहौल बनेगा, लोगों के अन्दर प्रेम और एकता की भावनायें पैदा होंगी, अन्तिम हज के अवसर पर हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने एक लाख से ज़ायद इन्सानों की जनसभा को संबोधित किया, जिसमें मानव अधिकार से सम्बन्धित हर छोटी बड़ी बात आप सल्ल0 ने बताई, यह सम्बोधन केवल सामने मौजूद लोगों के लिए ही नहीं था, बल्कि क़यामत तक आने वाले इन्सानों से था।

हज़ारों दुरूद व सलाम हो अल्लाह के आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर।

❖❖❖

इन्सानी समाज के तीन घातक रोग

हज़रत मौलाना सै0 मु0 राबे हसनी नदवी

ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, बहुत गुमान करने से बचो कि कुछ गुमान गुनाह होते हैं। टोह में मत पड़ो और तुम में से कोई किसी की पीठ पीछे निन्दा (ग़ीबत) न करे। क्या तुम में कोई ऐसा है जो अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाना पसन्द करेगा। देखो तुम खुद इससे घिन खाते हो। अल्लाह से डरो, अल्लाह बड़ा तौबा क़बूल करने वाला और दयावान है''।

(सूरः हुजरात आयत नं0 12)

इस आयत करीमा में गुमान करने, किसी की टोह में लगने, किसी की ग़ीबत करने से रोका गया है, यह वह घातक रोग हैं जिनसे इन्सानी समाज में अव्यवस्था और फूट पड़ती है, दिलों में नफ़रत पैदा हो जाती है, बताया गया कि बुरे गुमान से बचो, आज कल यह बीमारी बहुत ज़्यादा है, आदमी बिना किसी झिझक के तुरन्त किसी पर भी टिप्पणी कर देता है। ''यह काम फ़लां ने इसलिए किया होगा'', यह बात इसलिए हुई होगी, वगैरह, वगैरह, हर किसी के सम्बन्ध में बुरी राय निकालने की आदत पड़ गई है, इसीलिए कहा गया कि ज़ियादा बुरा गुमान करने से बचो, क्योंकि बार बार गुमान करने में तुमसे ग़लती होगी, जिसकी बुन्याद पर ख़राब परिणाम निकलेंगे, उदाहरणतः कोई व्यक्ति तुमसे कोई अच्छी बात कहे, और तुम उसे अपने ऊपर टिप्पणी समझ लो और अपने इस विचार को शक्ति देने लगो तो इसका परिणाम यह होगा कि तुम उससे दूरी इख़्तियार करने लगोगे, यह सोचोगे कि उन्होंने ऐसा इसलिए कहा कि वह हमारा बुरा सोचते हैं और इस तरह बिना किसी बुन्याद के अपने ईमानी भाई से दिल में नफ़रत पैदा कर लोगे। इल्म, वास्तविकता के जानने को कहा जाता है, और गुमान का सम्बन्ध केवल इन्सानी विचार और अनुमान से होता है, आग के विषय में हमें इल्म है कि वह जलाती है, अगर हमको मारा जाये और यह कहा जाये कि आग नहीं जलाती तब भी हम इस बात को मानने के लिए तैयार नहीं हो सकते कि आग नहीं जलाती, क्योंकि हमें उसके सम्बन्ध में भली भांति इल्म है, परन्तु अगर कोई व्यक्ति हमारे सामने से घूम कर जा रहा है तो हमें इसका वास्तविक इल्म नहीं है कि वह इस तरह क्यों जा रहा है, अतः ऐसे व्यक्ति के लिए इन्सान कोई वास्तविक विचार नहीं स्थापित कर सकता केवल अपने अनुमान से उसके विषय में सोचता रहेगा और ज़ेहन में विभिन्न प्रकार के विचार लायेगा, कभी यह सोचेगा कि इसको इधर कोई काम रहा होगा, इसलिए घूम कर गया है, कभी यह सोचेगा कि इसको हमसे कोई चिढ़ है इसलिए घूम कर

गया है, इसी चीज़ को ''ज़न'' गुमान कहा जाता है कि इन्सान अपने देखने से यह क़यास कर ले कि फ़लाँ आदमी ने ऐसा इसलिए किया होगा, और बाज़ वक्त यही चीज़ इन्सान को बहुत नुक़सान पहुँचाती है, जैसा कि ऊपर ज़िक्र किया गया था, शरीअत इस्लामिया में इन चीज़ों पर ख़ास तवज्जो दिलाई गई है, यहाँ तक फ़रमाया गया, आदमी के झूटा होने के लिए यही काफ़ी है कि वह हर सुनी सुनाई बात नक़ल कर दे, इसका मतलब यही है कि इन्सान को हर बात किसी के सामने नक़ल नहीं करना चाहिए, मुमकिन है नक़ल करने में ग़लती हो जाये और जिसके सामने बात नक़ल की जाये उसके ज़ेहन में दूसरे के बारे में खटक पैदा हो जाये और बात बदगुमानी तक पहुँच जाये, जबकि उन सज्जन ने केवल तफ़रीह और मज़ा लेने के लिए उसको नक़ल कर दिया हो, इसलिए इस तरह की बातें करने से मना किया गया, क्योंकि ऐसी बातें न कहने में कोई खतरा नहीं और कह देने में खतरा ही खतरा है, मुनासिब यही है कि जब तक किसी बात के विषय में वास्तविक ज्ञान न हो जाये उसका चर्चा न किया जाये, सावधानी से काम लिया जाये।

टोह इसी आयत में फ़रमाया गया कि टोह से भी काम न लो, यानी लोगों की ग़लतियाँ ढूँढ़ने की कोशिश न करो, आदमी को यह भी शौक़ होता है कि अगर किसी के ऐब मालूम होने का इमकान भी हो तो उसके पीछे लग जाते हैं, एक दूसरे से कहने लगते हैं कि फलां ने ऐसी हरकत की, फलां के बारे में आप क्या कहते हैं, हालांकि अगर फलां ने हरकत की भी हो तो तुम को उससे क्या सम्बन्ध? वह स्वयं अल्लाह तआला के यहां अपने अमल का जवाब देह होगा, आपको किसी के अन्दर कीड़ा निकालने या किसी के पीछे पड़ने की ज़रूरत नहीं, दूसरों की ग़लतियाँ तलाश करना, उनकी कमज़ोरियाँ ढूँढना ईमान के विरुद्ध बातें हैं, किसी की ग़लती पर निशानदही करने के आप उस वक़्त जिम्मेदार हैं जब आप मुसलमानों के हाकिम हों, वह इसलिए कि हाकिम को फ़ैसला करने का अख़्तियार होता है, अलबत्ता उसके अलावा किसी को हक़ नहीं कि वह किसी की बुराई की चर्चा करे, किसी के ऐब मालूम करे, क्योंकि ऐबों का मालूम करना गुनाह है और ऐबों के मालूम होने के बाद उनकी चर्चा करना और ज़ियादा गुनाह है जिसको ग़ीबत (परोक्ष निन्दा) कहते हैं मानो यह ''टोह'' लोगों को बुरी राह की ओर ले जाने वाला अमल है, इससे हम में से हर एक को बचने की कोशिश करना चाहिए।

इस आयत में टोह की मनाही के बाद उस चीज़ से रोका गया है जो उसके बाद का मरहला है, और आज कल हम सब उसमें ग्रस्त हैं, फ़रमाया गया कि एक दूसरे की ग़ीबत भी न करो, ग़ीबत का मतलब यह है कि दूसरे के ऐब का तज़किरा किया जाये, यह गुनाह की बात है और उसकी सज़ा भी बड़ी सख़्त है, जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है कि क़यामत के दिन जिस आदमी की ग़ीबत की गई

होगी उसके नाम–ए–आमाल में गीबत करने वाले के नाम–ए–आमाल से नेकियों का इज़ाफ़ा कर दिया जायेगा, अगर उसके पास नेकियाँ नहीं होंगी तो उस शख्स के गुनाह उस पर लाद दिये जायेंगे, निःसंदेह यह बहुत ही बड़ा नुक़सान है, जिसकी ओर हमें ज़रा भी ख़्याल नहीं होता, हम केवल तफ़रीह और मनोरंजन के लिए दूसरों पर खुल कर टिप्पणी करते हैं और मुफ़्त में अपनी नेकियाँ दूसरों को दे देते हैं, इसलिए बहुत डरने की बात है कि कहीं ऐसा न हो कि कल क़यामत में हमारी यही तफ़रीह हमारे लिए वबाले जान साबित हो।

ग़ीबत का कुरआनी उदाहरणः–

ऊपर लिखित आयत में ग़ीबत करने का उदाहरण मुर्दा भाई का गोश्त खाने से दिया गया है, दुनिया में हम जो अमल करते हैं, अल्लाह तआला ने उस व्यवस्था के दो रुख रखे हैं, जैसे सिक्के के दो रुख होते हैं, उसमें एक ओर कुछ होता है और दूसरी ओर कुछ होता है, इसी प्रकार हमारे उन आमाल के भी दो रुख़ हैं, एक रुख़ वह है जिसको हम देख नहीं रहे हैं और एक वह है जिसे हम देख रहे हैं, हम बोल रहे हैं तो हमें मालूम है कि हमारी आवाज़ सामने इधर उधर जा रही है, हालांकि एक और जगह भी हमारी आवाज़ सुरक्षित हो रही है और वह है हमारे दोनों कन्धों पर बैठे हुए फ़रिश्ते जो हमारी एक एक चीज़ को नोट कर रहे हैं। यह गुप्त, व्यवस्था है जिसका हिसाब क़यामत में होगा। इन्सान को ग़ीबत में बहुत मज़ा आता है लेकिन कुरआन मजीद में ग़ीबत की मिसाल मुरदा भाई का गोश्त खाने से दी गई है, यानी अगर कोई किसी की ग़ीबत कर रहा है तो वह ऐसा है जैसा कि वह अपने भाई का मुरदा जिस्म खा रहा है यह ऐसी गन्दी बात है कि अगर इन्सान को मालूम हो जाए कि हम यह अमल कर रहे हैं तो उसको कराहत (घृणा) होगी, चूँकि इसका इल्म क़यामत में होगा इसलिए लोगों को अभी अन्दाज़ा नहीं कि हम किस क़दर संगीन अमल केवल तफ़रीह के लिए कर रहे हैं, न जाने क़यामत में किस मात्रा में यह नज़र आयेगा कि हमने अपने मुरदा भाई के गोश्त को कितना खाया चुनांचि उसकी वह सज़ा आख़िरत में दी जायेगी जिसका अभी ऊपर ज़िक्र किया गया और ग़ीबत करने वाले का नाम–ए–आमाल बिल्कुल ख़ाली हो जायेगा। नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को किसी वक़्त आमाल की हक़ीक़त वास्तविकता दिखा देता था, इसलिए एक रिवायत में आता है कि एक शख़्स जिन्होंने बहुत ग़ीबत की थी, उनसे रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया कि जाओ अपना मुँह साफ़ कर के आओ तुम्हारे मुँह में गोश्त के टुकड़े मालूम होते हैं। हर बुरी चीज़ से बचने और हर अच्छे अमल की बुन्याद यह है कि इन्सान अल्लाह से डरने वाला बन जाये, इसीलिए इस आयत के आख़ीर में फ़रमाया गया कि अल्लाह से डरो यानी अल्लाह के हिसाब से डरो, अल्लाह तआला क़यामत में सख़्त हिसाब लेगा।

◆◇◆

भारत के अतीत में मुस्लिम शासकों की धार्मिक निष्पक्षता

सैय्यद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान

इस लेख का विषय ''हिन्दुस्तान के मुग़ल इतिहास में मुसलमान शासकों की धार्मिक न्यायप्रियता'' है। मुग़ल शासन से तात्पर्य वह युग है जब कि इस देश में मुसलमानों का शासन रहा। वह यहाँ आए तो उनको यहाँ के ऐसे वासियों का सामना पड़ा जो उनके धर्म के अनुयायी न थे। इस लेख में यह स्पष्ट करना है कि इन दोनों धर्मों के अनुयायियों में बड़ाई और सत्ता के लिए केवल खून खराबा और विनाश होता रहा या दोनों में न्यायप्रियता और सद्भाव भी रहा। इतिहास की सामग्री कच्ची होती है उसे दिलों को तोड़ने और जोड़ने के लिए प्रयोग किया जा सकता है। किसी देश के किसी युग का केवल खून खराबा और भयावहता की कहानियाँ एकत्र कर दी जाएं तो उसका इतिहास निश्चित रूप से कसाई की दुकान हो जाएगा। लेकिन इस युग में ऐसी बहुत कुछ सामग्री मिलेगी जिससे प्यार और मुहब्बत की दास्तानें, सद्भाव और उदारता की कहानियाँ लिखी जाएं तो उसी ज़माने का इतिहास दिलों को चोट पहुँचाने के बजाए दिलों को खुश करने वाला हो जाए। इतिहासकार का क़लम भी अजीब होता है। यह आग भी है और पानी भी, काँटा भी है और फूल भी, ज़हर भी है, अमृत भी, प्यार और चमक भी है तो द्वेष और शत्रुता की तलवारों की झंकार भी, यह कलेजे को छेद कर लाइलाज नासूर भी पैदा कर सकता है तो दिलों को उत्साह भी प्रदान कर सकता है। इस लेख में शबनम, फूल, प्यार और उत्साह की कहानियाँ सुनानी हैं।

लड़ाईयों की काली दास्तानें:–

यह सही है कि मुसलमान हिन्दुस्तान में आए तो उनको बड़ी–बड़ी लड़ाईयाँ लड़नी पड़ीं, उन लड़ाईयों में खून खराबा भी हुआ, उनकी सेनाओं ने कुछ क्षेत्रों में विनाश भी किया, उन्होंने युद्धरत वासियों के लिए कठोर, अनुचित और कष्टदायक शब्द भी कहे, उनके इतिहासकार अपनी विजय गाथाएं स्वाभिमान और योद्धा की सोच से ऐसी बातें भी लिख गए हैं जिनसे ग़ैर मुस्लिमों की भावनाएं भड़कती हैं और दुख भी होता है। लेकिन आज–कल की लड़ाईयों में जो कुछ होता है उसकी तुलना पिछले ज़माने की लड़ाईयों से की जाए तो पिछले ज़माने की सभी काली कथाएं फीकी पड़ जाती हैं। दूसरे विश्वयुद्ध में अमेरिका ने जापान के शहर हिरोशिमा पर एटम बम से जो खून बहाए, भयावहता, तबाही और विनाश फैलाया वह मानवता के इतिहास की एक ऐसी दर्द भरी घटना है जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। हिन्दुस्तान के मुसलमान राजाओं के इतिहास में किसी विजय और कब्ज़ा करने के मामले में ऐसी भयानक और तबाही की मिसाल नहीं मिलेगी। इन पंक्तियों को लिखते समय रेडियो से यह समाचार सुना कि अमेरिकी सेना ने उत्तरी वियतनाम में कम से कम 75 लाख बम गिराए होंगे। इस क्रूरता का उदाहरण तो तैमूर जैसे अत्याचारियों के यहाँ भी नहीं मिलेगा। फिर यूरोप के मध्य युग में भी विजय और अधिकार ज़माने के सिलसिले में क्या नहीं होता

रहा। सन् 1066 ई0 में विलियम प्रथम ने ब्रिटेन पर आक्रमण किया तो उसका आदेश था कि इन्सान और जानवर दोनों में से किसी के साथ रियायत न की जाए। घर, गल्ला, खेती आदि सब नष्ट कर दी जाए। 9 वर्ष तक यूरक और डरहम के बीच में ज़मीन के किसी टुकड़े पर खेती नहीं हुई। कुछ वर्षों के अन्दर सभी पद और अधिकार देशवासियों से ले कर नार्मनों को दे दिए गए जिन्होंने मूल वासियेां को नफ़रत की निगाहों से देखा, उनके खेतों को नष्ट किया, उनकी औरतों के साथ बुरा व्यवहार किया। लोगों को जेलों मे रखा, एक लाख औरतों और मर्दों के साथ कठोर व्यवहार किया। 17वीं शताब्दी में जर्मनी में 30 साल तक चलने वाला युद्ध आरम्भ हुआ। जिसमें यूरोप की कई सरकारें लिप्त हुईं। इस लम्बी अवधि की लड़ाईयों में बोहिमिया के 35 हज़ार गाँवों में केवल 6000 गाँव बचे रह गए। मोरोया, बेवरिया, फ्रोकोनिया, सवाबिया आदि खून खराबा, आकाल और महामारियों से पूरी तरह नष्ट हो गए। जर्मनी में 1 करोड़ 60 लाख की आबादी में केवल 7 लाख आदमी जीवित रह गए। ऐसे उदाहरण यूरोप के इतिहास में बड़ी संख्या में मिलेंगे।

हिन्दुस्तान के मुसलमान विजेताओं की क्रूरता और खून–खराबे की तुलना यूरोप के विजेताओं से की जाए तो फिर इनकी कहानी अधिक भयानक नहीं दिखाई देगी। हालाँकि अत्याचार बहरहाल अत्याचार है, अत्याचार में अधिक और कम का प्रश्न नहीं होता। लेकिन किसी सरकार के अत्याचार दमन और उत्पीड़न की घटनाओं की तुलना में उसकी उदारता का व्यवहार का पलड़ा भारी रहे तो वह निश्चित रूप से प्रशंसा करने योग्य है। हिन्दुस्तान के मुसलमान बादशाहों के शासनकाल में अगर अत्याचार और उत्पीड़न हुआ तो इसकी कहानियाँ उनके लिए छोड़ दीजिए जो नफ़रत और घृणा फैलाकर दिलों को तोड़ने में लगे हुए हैं। लेकिन आइए थोड़ा वफ़ादारी, समानता और प्रेम और सौहार्द की घटनाएं भी सुन लीजिए।

हिन्दुस्तान से अरबों का लगावः–

हिन्दुस्तान में मुसलमानों का नियमित इतिहास अरबों के आगमन से आरम्भ होता है। अरबों को तो हिन्दुस्तान से हमेशा बहुत लगाव रहा। इसका एक प्रमाण यह भी है कि वह इस्लाम से बहुत पहले अज्ञानता काल में अपनी लड़कियों और प्रेमिकाओं के नाम हिन्दा रखते थे। और बहुत सी हिन्दुस्तानी चीज़ों के नाम जैसे हिन्दी तलवार, चन्दन और ऊद (सुगन्धित लकड़ी) का उल्लेख उस युग की कविताओं में पाया जाता है। और जब पवित्र कुर्आन अवतरित हुआ तो मेरे उस्ताद सैय्यद सुलैमान नदवी के अनुसार, इसमें जन्नत की प्रशंसा में इस जन्नत जैसे देश की तीन सुगन्धों मुश्क, सोंठ और कपूर का उल्लेख है (अरब और हिन्दुस्तान के सम्बन्ध) अरबों का यह मानना रहा कि हज़रत आदम अलै0 दुनिया में दजना के स्थान पर उतारे गए जो भारत में स्थित है। मुहम्मद की रोशनी हज़रत आदम अलै0 की पेशानी में अमानत थी इससे सिद्ध होता है कि अल्लाह के पैग़म्बर मुहम्मद सल्ल0 का प्रारम्भिक प्रकटीकरण इसी भू–भाग पर हुआ। (तफ्सीर दुर्रे मंसूर, सूयुती, खण्ड 1 पृ0 55)

इसीलिए अरबों में यह रिवायत प्रसिद्ध है कि अल्लाह के पैग़म्बर सल्ल0 ने फ़रमाब कि मुझे हिन्दुसतान की ओर से दिव्य सुगन्ध आती है और हज़रत अली रज़ि0 ने भी फरमाया कि सबसे पवित्र और सुगन्धित स्थान हिन्दुस्तान है। (सुबहतुल मरजान फ़ी तारीख़ हिन्दुसतान, अध्याय–1) एक रिवायत यह भी है कि हज़रत इमाम हुसैन के बेटे इमाम ज़ैनुल आबिदीन की माँ नस्ल के अनुसार सिन्धी थीं, यद्यपि उनको ईरानी भी बताया जाता है। यदि पहली रिवायत सही समझ ली जाए तो इस्लाम के सम्मानित वर्ग अर्थात सैय्यदों के एक बड़े भाग का सम्बन्ध इसी उपमहाद्वीप से हो जाता है। ऐतिहासिक रूप से अरबों का समुद्री बेड़ा हज़रत उमर रज़ि0 के ज़माने (15 हि0 / 636 ई0) में मुम्बई ही के क्षेत्र थाने में आया था उस समय एक महत्वपूर्ण बन्दरगाह था। उसके बाद यह अरब भरूच और फिर दीबल की ओर बढ़े। यह सभी क्षेत्र लम्बे समय तक मुम्बई में ही गिने जाते थे।

❖❖❖

पर्दा क्यों?

इदारा

1. पर्दा इस्लाम का मज़हबी फरीजा है।
2. पर्दा कुर्आन और ह़दीस दोनों से साबित है।
3. पर्दा अल्लाह व रसूल का हुक्म है।
4. पर्दा औरत की इ़ज़्ज़त व आबरू का जरिया है।
5. पर्दा औरत का हुस्न और ज़ेवर है।
6. पर्दा औरत को बेहयाई के कामों से बचाता है।
7. पर्दा गुप्तांगों और नज़र की हिफाज़त का ज़रिया है।
8. पर्दा औरत की प्राकृतिक लज्जा की निशानी है।
9. पर्दा औरत की हिफाजत के लिए ढाल है।
10. पर्दा सम्मान और सुरक्षा के भाव को बढ़ाता है।
11. पर्दा छोटे और बड़े गुनाहों से बचाता है।
12. पर्दा औरत के नेक होने की दलील है।
13. पर्दा किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ने में रुकावट नहीं है।
14. पर्दा सुरक्षा और सम्मान के साथ आगे बढ़ने का मौक़ा देता है।
15. पर्दा वाली औरत अल्लाह के ह़िफाज़त में रहती है।
16. पर्दा वाली औरत अल्लाह के ज़ियादा करीब रहती है।
17. पर्दा शैतान की निगाह से बचाता है।
18. माँ–बाप अपनी बच्चियों को पर्दे का आदी बनायें और अल्लाह और उसके रसूल को राज़ी करके जन्नत के हकदार बनें।

❖❖❖

कहना बड़ों का मानो

ख्वाजा अल्ताफ़ हुसैन हाली रह0
1837–1915

सर पर बड़ों का साया, साया ख़ुदा का जानो
हुक्म उनका मानने में बरकत है, मेरी मानो
चाहो अगर बड़ाई, कहना बड़ों का मानो

माँ–बाप और उस्ताद, सब हैं ख़ुदा की रहमत
है रोक टोक उनकी हक़ में तुम्हारे नेमत
कड़वी नसीहतों में उनकी भरा है अमृत
चाहो अगर बड़ाई, कहना बड़ों का मानो

माँ–बाप का अ़ज़ीज़ो, माना न जिसने कहना
दुशवार है जहाँ में इ़ज़्ज़त से उसका रहना
डर है पड़े न सदमा ज़िल्लत का उसको सहना
चाहो अगर बड़ाई, कहना बड़ों का मानो

दुन्या में की जिन्होंने माँ–बाप की इताअ़त
दुन्या में पाई इ़ज़्ज़त उक़बा में पाई राहत
माँ–बाप की इताअ़त है दो जहाँ की दौलत
चाहो अगर बड़ाई, कहना बड़ों का मानो

तुमको नहीं खबर कुछ अपने बुरे भले की
जितनी है उम्र छोटी उतनी है अक़्ल छोटी
है बेहतरी इसी में जो है बड़ों की मर्ज़ी
चाहो अगर बड़ाई, कहना बड़ों का मानो

है कोई दिन में प्यारो वह वक़्त आने वाला
दुन्या की मुश्किलों से तुम को पड़ेगा पाला
मानेगा जो बड़ों की जीतेगा वह ही पाला
चाहो अगर बड़ाई, कहना बड़ों का मानो

नोटः– ख्वाजा अल्ताफ़ हुसैन हाली उर्दू के बड़े प्रसिद्ध शायर गुज़रे हैं वह 1837 में पानीपत में पैदा हुए और 1 जनवरी 1915 को पानीपत ही में उनका इंतिक़ाल हुआ।

इस्लामी अक़ीदे (विश्वास)

मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

सज्दाः–

इबादत के आमाल में सज्दा इसकी बड़ी शक्ल है, ये सिर्फ अल्लाह के साथ खास है। किसी दूसरे को सज्दा करना शिर्क वाला अमल है, अल्लाह तआला फरमाता हैः–

अनुवादः– *न सूरज को सज्दा करो न चाँद को, और सज्दा अल्लाह को करो जिसने उनको पैदा किया, अगर तुम उसी की बंदगी करते हो।*

(सूरह : फुस्सिलत – 37)

एक हदीस में आता है कि हज़रत क़ैस बिन साद बिन उबादा कहते हैं– मैं ''हियरह'' गया वहाँ मैंने लोगों को देखा कि वो अपने चौधरी को सज्दा करते हैं तो मैं रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाज़िर हुआ और कहा, मैं हियरह गया तो वहाँ देखा कि वो लोग अपने चौधरी को सज्दा करते हैं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस बात के ज़्यादा हकदार हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सज्दा किया जाए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझ से फरमाया तुम्हारा क्या खयाल है अगर तुम मेरी कब्र के पास से गुज़रो तो क्या तुम उसको सज्दा करोगे? तो मैंने कहा नहीं! तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः तो ऐसा न करो।

(अबू दाऊद : 2142)

बहुत से जेहनों में ये बात आती है कि अगर गैरुल्लाह को सज्दा करना शिर्क होता तो अल्लाह तआला हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को फरिश्तों से सज्दा न कराते और इसी तरह हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम और उनके बेटे हज़रत यूसुफ़ के आगे सज्दे में न गिर जाते, ये एक शैतानी वसवसा है, पिछले पैगम्बर हज़रात की शरीयतें अलग थीं, ये उम्मत सिर्फ हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शरीयत की पाबन्द है, हज़रत आदम की शरीयत में भाई बहन की शादी जायज़ थी, हज़रत याकूब और हज़रत यूसुफ की शरीयत के कुछ अलग अहकाम थे, उनके यहां सज्द–ए–ताजीमी की इजाज़त थी लेकिन इस शरीयत में अल्लाह के अलावा किसी के लिए सज्दे की इजाज़त नहीं है, जैसा कि ऊपर आयत और हदीस गुज़र चुकी है, जो चीजें शरीयत–ए–मुहम्मदी में मना और हराम हैं दूसरी पिछली शरीयतों से दलील ले कर उन पर अमल करना खुली गुमराही है और हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हक मारना है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वफात से दो तीन रोज पहले ये बात फरमाई थी– अल्लाह यहूदियों और ईसाईयों पर लानत करे उन्होंने अपने नबियों की कब्रों को सज्दा करने की जगह बना लिया।

(सुनन अल–तिर्मिजीः 2979)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आखिर में ये बात स्पष्ट रूप से इसीलिए फरमाई कि कहीं आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र के

साथ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के उम्मती वही काम न करने लगें जो दूसरी उम्मतों ने अपने नबियों की क़ब्रों के साथ किया।

जाहिर है जब हुजूर–ए–अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र–ए–मुबारक के सामने सज्दा ना जायज़ है तो किसी और वली की क़ब्र पर सज्दा करना कहाँ जायज़ हो सकता है, ये मुशरिकों वाला अमल है जो लानत का हक़दार है, आज उम्मत का एक वर्ग इस में लिप्त है और वो अल्लाह की और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खुली नाफरमानी कर रहा है।

जिस तरह क़ब्र को सज्दा करना शिर्क वाला अमल है इसी तरह किसी जिंदा इंसान को या किसी भी दूसरी चीज को सज्दा करना शिर्क का अमल है, ये मुशरिकों वाली रस्म भी कुछ इलाकों में पैदा हो गई है कि लोग अपने पीर को सज्दा करते हैं, सज्दा करने वाले का भी ईमान जाता है और सज्दा कराने वाले का भी, इसलिए कि ये अमल ''इबादत वाला अमल'' है और किसी इबादत का अमल अल्लाह के अलावा किसी और के लिए किया जाए ये ''शिर्क फिल उलूहियत'' है, जिसको मिटाने के लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस दुनिया में तशरीफ लाए, अगर कोई ये सोचता है कि ये सज्दा इबादत के लिए नहीं बल्कि अदब व ताजीम के लिए है तो उसका जवाब ये है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बढ़ कर मखलूक (सृष्टि) में कौन हो सकता है मगर खुद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सख़्ती से उम्मत को इससे मना फरमाया जैसा कि ऊपर हदीस में गुज़र चुका, वहाँ जिस सज्दे का ज़िक्र था वो सजद–ए–ताज़ीमी ही था मगर इससे उम्मत को रोक दिया गया, इसीलिए पूरी उम्मत इस पर सहमत है कि अल्लाह के अलावा किसी के लिए भी किसी भी तरह सज्दा जायज नहीं है और ये मुशरिकों वाला अमल है। अल्लाह तआला फरमाता है– ''अनुवादः और ये सज्दे सब अल्लाह ही के लिए हैं तो अल्लाह के साथ किसी को मत पुकारो।

सज्दे के अलावा किसी के सामने नमाज़ की तरह हाथ बाँध कर खड़ा होना भी दुरुस्त नहीं, एक हदीस में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

अनुवादः– ''जिसको ये अच्छा लगता हो की लोग उसके सामने तस्वीर की तरह खड़े रहें वो अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले''।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तो ये भी पसंद न था कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मजलिस में विशिष्ट जगह पर तशरीफ रखें, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आम तरीक़ा ये था आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ रखते और सहाबा (रजि०) आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इर्द गिर्द घेरा बना लेते। ◆◇◆

तौहीद तो यह है कि ख़ुदा हश्र में कह दे
यह बन्दा दो आलम से ख़फ़ा मेरे लिए है

ईमान व अमल और उनकी आवश्यकतायें

–मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आजमी नदवी

–हिन्दी अनुवादः जमाल अहमद नदवी

दुन्या में दो प्रकार के इन्सान हैं एक आम इन्सान और दूसरा ईमान व आस्था रखने वाला इन्सान, आम इन्सान वह है जो दो पैर, दो हाथ, दो आँखें, दिल व दिमाग रखता है, और अपनी मानवीय जरूरतें पूरी करता है और दुन्या में मगन रहता है, इस प्रकार के इन्सान दुन्या में एक बड़ी संख्या में पाये जाते हैं, उनकी चाहत दुन्या में आराम व राहत के समस्त प्रकार की चीज़ों का एकत्र करना है और उनसे भोग विलास करना है, अतीत काल से ऐसे लोग रहे हैं जो हर समय रोटी, कपड़ा और मकान की फिक्र में लगे रहते हैं और इन चीज़ों की प्राप्ति ही को अपनी कामयाबी ख़्याल करते हैं उनके यहाँ आखिरत की चिन्ता न के बराबर थी वह अल्लाह और उसके रसूल की शिक्षाओं से बिल्कुल नावाकिफ थे, बल्कि अगर कोई बताने वाला आ जाता तो उसका मज़ाक़ उड़ाते और उस पर जुम्ले कसते, उसके साथ नामुनासिब सुलूक करते, उनके इसी नारे को कुर्आन ने यूँ कहा है, ''यही दुन्यावी ज़िन्दगी है इसी में हम मरे और जीयेंगे और दोबारा उठाये नहीं जायेंगे''।

जब इन्सान ने इस गलत फिक्र को कुबूल करना शुरु किया तो अल्लाह ने नबियों और रसूलों को भेजने का सिलसिला शुरु फरमाया, नबियों ने अपने अस्तित्व से अपने दूर व करीब के इलाक़ों को रौशन किया, और लागों की हिदायत का जरीया बने, और अल्लाह तआला ने हर क़ौम में नबी भेजे जाने की व्यवस्था कायम की, हज़रत आदम अलै0 से लेकर हज़रत मूसा अलै0 तक बड़ी संख्या में नबी आये और वह लोगों को सही रास्ते पर लाते रहे, हज़रत ईसा अलै0 के आसमान पर उठाये जाने के बाद कई सौ साल तक कोई नबी नहीं आया तो दुन्या में घोर अंधेरा छा गया, और हर ओर बुराईयाँ ही बुराईयाँ फैल गयी, भौतिकवाद ने सर उठाना शुरु कर दिया और ईमान के खिलाफ हवायें चलने लगीं।

आप सल्ल0 के नबी बना कर भेजे जाने से पहले की जाहिली ज़िन्दगी में यही भौतिकवादी तत्व गालिब था, इस सोच के मानने वाले बड़ी संख्या में थे, बल्कि पूरा अरब प्रायद्वीप भौतिकवाद में लीन हो गया था, और यह विचार दुन्या के दीगर इलाकों में भी फैल गया था, और उसी के मुताबिक़ लोगों ने ज़िन्दगी जीना भी शुरु कर दिया, अल्लाह तआला ने अरबों और गैर अरबों को इस हालत में देखा तो उसने सख्त नापसंदीदगी का इज़हार किया, और चाहा कि दुन्या को हलाक़ कर दें, लेकिन उसकी शाने करीमी ने एक मौक़ा दिये जाने का फैसला किया, और आप

सल्ल0 को नबी बना कर भेजा गया, आप सल्ल0 दुन्या में आये तो आप सल्ल0 ने हज़रत इब्राहीम अलै0 की शरीयत के कुछ निशानात पाये, चालीस वर्ष की उम्र में अल्लाह तआ़ला ने आप सल्ल0 को नबी बनाया और ईमान व अमल की अजीम दौलत से नवाज़ा और कुर्आन को उतार कर पूरी इंसानियत के लिए आम कर दिया, ईमान और नेक अमलों से सुसज्जित हो कर इन्सानों का एक दूसरा समूह अस्तित्व में आया, जो ईमान व यक़ीन वालों का समूह था। जिन्हें ''सहाबा'' कहा जाता है।

ईमान नाम है अल्लाह तआला के मुतअल्लिक इस अक़ीदे का यकीन कि वह सारे ब्रह्माड का पैदा करने वाला और मालिक है वही इबादत के लायक है उसी का पूरे ब्राह्माड पर अधिकार है। फरिश्तों को उसी ने पैदा किया, रसूलों को उसीने भेजा, किताबें उसी ने उतारीं, तक़दीर का वही मालिक है, चुनांचे समस्त अच्छे कामों को इबादात, अख़लाक, मुआमलात, समाजियात में तक्सीम किया जाता है, इन सब के अन्तर्गत किये जाने वाले अच्छे कार्यों को नेक काम कहा जाता है।

इबादात में सबसे पहले नमाज़ का दर्जा है, उसके अदा करने पर अल्लाह के खुश होने और न अदा करने पर उसकी नाराज़गी हदीसों में बयान की गई है, इसी प्रकार रोज़ा, ज़कात, हज का भी हुक्म है। अख़लाक़ियात (नैतिकता) में सच बोलना, झूठ से परहेज़ करना, बदगुमानी, गीबत, एक दूसरे का मज़ाक उड़ाना, बुग्ज़, हसद, दुशमनी से दूर रहना, यह सब शामिल हैं, इसी प्रकार माँ–बाप के साथ अच्छा बरताव, उनकी सेवा पर जन्नत का वादा, बाल बच्चों का पालन पोषण उनकी शिक्षा की फिक्र सभी इस नैतिकता में शामिल हैं, आपसी लेन देन कारोबार, वादा पूरा करना, शराब पीने से बचना, जुवा, सट्टा से दूर रहना, ख़रीदने, बेचने में हलाल हराम का ख्याल रखना, निकाह, तलाक, हिबा, वरासत यह सब भी नेक कामों की श्रेणी में आते हैं।

ईमान और नेक कामों से मिल कर ही एक अच्छा समाज बनता है, सही और पवित्र इस्लामी समाज वह समाज कहलाता है जहाँ हर व्यक्ति अम्न व इंसाफ के साथ ज़िन्दगी गुजारता हो, हर एक के मन में हमदर्दी हो, कुर्बानी का जज़्बा हो, महब्बत व भाईचारा हो, हर एक न्याय प्रिय हो, आज कल ऐसे ही समाज की ज़रूरत है और लोग ऐसे समाज को पसन्द करते हैं, इसका सर्वोच्य नममूना मदीना तय्यिबा जहाँ सहाब–ए–किराम ने सही इस्लामी समाज का नमूना पेश किया, वहां हर वर्ग से जुड़े लोग थे लेकिन हर एक अपने नेक अमल से आगे बढ़ जाने की फिक्र में रहता था, जहाँ भी लोग अच्छे कामों यानी नमाज़, रोज़ा, हज और दूसरे नेक कामों को अपनायेंगे वहां एक सभ्य समाज वजूद में आयेगा।

इस्लाम एक प्राकृतिक दीन है और ज़िन्दगी के तमाम

भागों को अपने अन्दर समेटे हुए है, अल्लाह ने आखरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के जरीये पूरी इन्सानियत के लिए भेजा आप सल्ल0 ने उसके माध्यम से आपसी इख्तिलाफात, दुशमनियों को मिटाया, उस दीन ने दुन्या को अम्न दिया, इंसाफ दिया नेकी और बलन्द अख्लाक से माला माल किया इसी वजह से बहुत थोड़े समय में ही दुन्या के बड़े भाग पर बिना क़त्ल व खून खराबे के इस्लाम का विस्तार हो गया, यह इस दीन के अल्लाह की ओर से होने की निशानी है, शुरु ही से इस दीन को ऐसी महान हस्तियाँ मिलती रहीं जो दीन व शरीयत के माहिर और दुशमनों की साजिशी चालों से भली भांति वाकिफ थे इसलिए उन्होंने इस्लाम के पैगाम और उसकी इलमी, फिक्री और इन्सानी तालीमात को दुन्या के सामने बहुत अच्छे अंदाज़ में पेश किया, और पूरी दुन्या के सामने यह बात स्पष्ट कर दी कि इस्लाम किसी इन्सानी दिमाग की उपज नहीं, बल्कि वह अल्लाह का उतारा हुआ दीन है, उसकी निगाह में अमीर गरीब छोटे बड़े सभी समान हैं अल्लाह के नज़दीक फर्क इताअत गुजार और नाफरमान होने का है, अल्लाह का फरमान है ''जो अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करेगा तो अल्लाह तआला उन लोगों के साथ उसको (क़यामत के दिन) जमा फरमायेंगे जिन पर उसने इंआम किया है वह अम्बिया, सिद्दीकीन, शुहदा, सालिहीन और उनका बेहतरीन साथ होगा''।

(सूरः निसा–69)

इस्लाम विरोधी ताकतों ने इस खुदाई दीन को उग्रवाद और आतंकवाद का दीन बताने की पूरी कोशिश की, और उनको अपने लिए रोड़ा जाना, और उसको आउट ऑफ डेट बताया और इस प्रोपेगण्डे को हर स्तर पर फैलाया, और लोगों के दिल व दिमाग़ में यह बात बैठाने की कोशिश की कि मजहबे इस्लाम क़त्ल व गारतगरी पर उकसाता है और फित्ना व फसाद को हवा देता है उन्होंने इस सोच के लोग भी तैयार कर दिये जो उनकी मांसिकता और उनके सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार में सक्रिय हैं और इस्लाम को अपने लिए खतरा समझते हैं, जब कि सही बात यह है कि ईमान, और उसके सिद्धान्तों पर अमल पूरे मानव जगत के लिए नजात का जरीया है, और जो भी उनको अपनायेगा, कामयाब होगा इसलिए आज ईमान और उसकी मान्यताओं पर जमने की आवश्यकता है और उसी से उसके फलने फूलने की राहें हमवार होंगी और अच्छे नतीजे भी सामने आयेंगे इन्शाअल्लाह।

❖❖❖

यह दुन्या नफ़रतों के आखरी स्टेज पे है
इलाज इसका मुहब्बत के सिवा कुछ भी नहीं।

देश में नफरत का माहौल! ज़िम्मेदार कौन?

जमाल अहमद नदवी
(उप सम्पादक)

इस समय दुन्या में छोटे बड़े 195 देश हैं। 193 देशों को ही संयुक्त राष्ट्र की सदस्यता प्राप्त है ताइवान और वैकिटन (फिलिस्तीन) इसमें शामिल नहीं हैं। भारत समेत 106 देश अधिकारिक तौर पर सेक्युलर की श्रेणी में आते हैं, भारत विश्व का सबसे महान सेक्युलर देश है और यहाँ अनेकों जाति, धर्म और समुदाय के लोग एक लम्बे समय से एक साथ रहते चले आ रहे हैं और सबके दिलों में एक दूसरे के लिए आदर सम्मान का भाव है सब एक दूसरे के सुख–दुख में बराबर शरीक होते हैं, एक दूसरे के त्योहारों को अपना त्योहार समझते हैं किसी गाँव में किसी की बहन बेटी की शादी होती है तो क्या हिन्दू क्या मुसलमान सब एक दूसरे की मदद को खड़े रहते हैं देश अंग्रेज़ों का गुलाम हुआ तो सब ने उसका दंश झेला, जब देश को आज़ाद कराने की आवाज़ उठी तो सब ने मिल जुल कर उसको अंजाम तक पहुंचाने का प्रयास किया। अंग्रेज़ों का विरोध सबसे पहले और सबसे ज़ियादा मुसलमानों ने किया इसलिए सबसे ज़ियादा सताये भी गये, इतिहास गवाह है कि हज़ारों आलिमों को गोलियों से भूना गया, तोपों से उड़ाया गया, जेल की सलाखों के पीछे डाला गया काले पानी की सजायें दी गयीं, उनके घरों को लूटा गया यहां तक कि उनको उजाड़ कर रख दिया गया, तब जा कर 15 अगस्त 1947 को देश अंग्रेज़ों के चंगुल से आज़ाद हुआ। विभाजन के बाद भी अपने पूर्वजों के बलिदानों को याद रखते हुए यहीं रहने को तरजीह दिया क्योंकि हमारे पूर्वजों का इस देश से जज्बाती तअल्लुक रहा है और अपने देश को आगे बढ़ाने और बचाने में हमेशा बढ़ चढ़ कर योगदान दिया है। और आज़ादी के बाद ही यह फैसला हुआ कि हिन्दुस्तान एक सेक्युलर देश घोषित किया जाय, और एक ऐसे संविधान की रचना की जाय जो देश के समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय, विचार अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता प्रदान करता हो इसी उद्देश्य के तहत एक संविधान सभा गठित हुई जिसमें सभी प्रान्तों, जाति और समुदाय के लोगों को शामिल किया गया और सबके विचार विमर्श से 2 वर्ष 11 माह 18 दिन में देश का संविधान बन कर तैयार हुआ और 26 जनवरी 1950 को देश का संविधान लागू किया गया। देश का संविधान ही देशवासियों को ताकत देता है और देश का संविधान देश के लिए आन बान और शान का ज़रिया है।

लेकिन अफसोस आज जब हम आजादी का 75वाँ साल मना रहे हैं तो आजादी के समय के भारत और आज के भारत में एक खुला फर्क महसूस कर रहे हैं, हमारा देश अंग्रेज़ों की गुलामी से आजाद तो हो गया लेकिन सामंती सोच रखने वालों की गुलामी से आज भी आजाद नहीं हो सका, संविधान ने जो अधिकार अल्पसंख्यकों खास कर मुसलमानों को दिये उन पर सरे आम आये दिन डाका डाला जा रहा है और उनको डराने और धमकाने के सारे हथकंडे अपनाये जा रहे हैं उनके पूर्वजों की कुर्बानियों को इतिहास से खुरच–खुरच कर मिटाने की

नापाक कोशिश की जा रही है, बल्कि पूरे इतिहास ही को बदलने की कोशिश की जा रही है ताकि अल्पसंख्यक सर उठा कर जी न सकें, उनकी पूरी कोशिश है कि अल्पसंख्यक रोजगार, खाने पीने, पहनने बोलने और अपनी आस्था के मुताबिक इबादत करने, वोट डालने, अपनी मर्जी के मुताबिक शादी व्याह करने और संविधान में दिये गये मूलभूत सुविधाओं से वंचित करने की कोशिश के साथ साथ दो नम्बर का शहरी घोषित करने का प्रयास कर रहे हैं और समाज के अन्दर भेदभाव को बढ़ावा दे कर नये राष्ट्रवाद की अलख जगाने की कोशिश में देश को बेरोजगारी, अशिक्षा, अन्याय, असमानता और एक दूसरे के खिलाफ़ नफ़रत के माहौल को बढ़ावा दे रहे हैं और राष्ट्रवाद का चोला पहने लोग देश और संविधान दोनों को खोखला करने में लगे हैं। अभिव्यक्ति की आजादी और मजहबी आजादी छीनने के उदाहरण देश ने बाबरी मस्जिद के फैसले, किसान आंदोलन, सी0ए0ए0 आन्दोलन, त्रिपुरा फसाद और खुले में नमाज़ को ले कर गुडगाँव में आये दिन बवाल की सूरत में देखा, और जो भी समाज के दबे कुचले लोगों की आवाज़ उठाने की कोशिश करता है चाहे उसका सम्बनध समाज के किसी भी वर्ग से हो उसे भी मुस्लिम हितैषी राष्ट्रद्रोही कह कर या तो जेलों में डाल दिया जाता है या उनका मुँह बंद करने के लिए अनेकों हथकंडे अपनाये जाते हैं और यू0ए0पी0ए0 जैसी सख्त धारायें लगा कर अनावश्यक परेशान किया जाता है और कहीं इतनी छूट कि हरिद्वार, रायपुर की धर्म संसदों में मुस्लिम कम्युनिटी के क़त्लेआम पर उकसाया जाता है और शासन प्रशासन आंख कान बंद कर लेता है और कोई ऐक्शन नहीं लेता जिसके परिणाम स्वरूप ऐसी मानसिकता वालों के हौसले बुलन्द रहते हैं और हर बार और मजबूती से अपनी आवाज बलन्द करते दिखाई देते हैं और उनके अन्दर शासन प्रशासन का कोई खौफ़ दिखाई नहीं देता।

इधर दो चार सालों से मुसलमानों के खिलाफ साजिशों की बाढ़ सी आ गई है कभी लिंचिग के ज़रिये मुसलमानों को जगह जगह परेशान किया जाता है यहाँ तक की उनकी जान ले ली जाती है और उनके परिजनों को न्याय के लिए दर दर भटकना पड़ता है लेकिन उनकी कहीं सुनवाई नहीं होती। तो कभी तीन तलाक़ के नाम पर, कभी सी0ए0ए0 के नाम पर, कभी लव जिहाद के नाम पर, कभी घर वापसी के नाम पर, कभी जिन्ना, कभी पाकिस्तान कभी मस्जिद मंदिर के नाम पर नफ़रत का बाजार गर्म रखा जाता है और आज कल बुल्ली बाई ऐप, सुल्ली डील और कलब हाऊस ऐप के जरिये मुस्लिम औरतों विशेष कर जो शिक्षित, उदारवादी, मानवाधिकार की रक्षक हैं उनकी तस्वीरें डाल कर उन की बोली लगाई जा रही है और उनकी इज्जतों को नीलाम किया जा रहा है यह कितना संगीन मामला है यह निजता से खिलवाड़ का मामला बनता है। इसी प्रकार कहीं खुले में नमाज़ को बहाना बना कर हंगामा, कहीं कालेजों में हिजाब को ले कर हंगामा तो कहीं हिन्दू राष्ट्र बनाने का खुले आम ऐलान तो कहीं मुसलमानों से कुछ खरीदने और बेचने पर बाइकाट की धमकी, और सोने पे सुहागा कि इन तमाम चीजों की वीडियो बना कर शोसल मीडिया पर डाला जा रहा है और सियासी आकाओं की वाह वाही

लूटने की कोशिश की जा रही है और शासन प्रशासन खामोश बना बैठा है और देश दुन्या में भारत की लोकप्रियता को बट्टा लग रहा है।

सवाल यह है कि इस सोच को ताक़त कहाँ से मिल रही है? क्या यह नौजवान जो इन केसों में गिरफ्तार हुए और जिनकी उम्रें 18–20 की बताई जा रही हैं इस प्रकार के बेशर्मी के खेल में अचानक लिप्त हो गये? या इन सबके पीछे कुछ और लोग हैं जो इन नौजवानों को जिनकी उम्रें अभी पढ़ लिख कर आगे बढ़ने और अपने माँ–बाप, घर खानदान और अपने देश का नाम रौशन करने की थी, अपने नापाक सियासी मंसूबों को हासिल करने के लिए उनको संरक्षण और साधन उपलबध करा के उनके भविष्य को तबाह व बर्बाद करने में लिप्त तो नहीं? वह कौन लोग हैं जो समाज के भाईचारे, अम्न अमान को तबाह करना चाहते हैं? क्या इससे विश्व पटल पर देश की लोकप्रियता बढ़ेगी? क्या इससे देश विश्व गुरु बनेगा? क्या अल्पसंख्यकों के मन में असुरक्षा, असहिष्णुता का भाव पैदा करके हम सब का विश्वास हासिल कर सकते हैं? क्या संवैधानिक पदों पर बैठे लोगों की नैतिक आत्मा दम तोड़ चुकी है? क्या इस नफरती वातावरण से हमारी अर्थव्यवस्था को नुकसान नहीं होगा? क्या ऐसे माहौल में उद्योग जगत को निवेश के लिए आकर्षित कर सकेंगे? क्या माँ–बाप की ज़िम्मेदारी नहीं बनती कि वह अपने बच्चों को नैतिकता की तालीम दें? क्या समाज सुधार के बड़े–बड़े दावे करने वाले खामोश रह कर नफ़रती लोगों के हौसले नहीं बलन्द कर रहे हैं? क्या धर्म संसद में मुसलमानों के नरसंहार पर लोगों को उकसाने वाले और भारत के संविधान और सुप्रीमकोर्ट पर आपत्तिजनक टिप्पणी करने वाले देश की न्यायव्यवस्था से खिलवाड़ के दोषी नहीं? क्या वह किसी प्रकार के सम्मान योग्य हैं? क्या नफरत की खेती करने वाले राष्ट्र विरोधी नहीं? क्या देश प्रेम का झूठा नारा दे कर देश के नौजवानों को नफ़रत की आग में ढकेलने वाले सच्चे राष्ट्रवादी कहे जाने के योग्य हैं? क्या इस मांसिकता के साथ देश को तरक्की के पथ पर आगे ले जाना मुम्किन है? क्या ऐसे लोगों को देश सेवक कहा जा सकता है? क्या इन हालात में हसीन फूलों का गुलदस्ता, हसीन कहे जाने के लायक़ होगा? देश में इस नफ़रत के माहौल का ज़िम्मेदार कौन है? इस प्रकार उनेकों प्रश्न हैं जो अनसुलझे हैं और देश प्रेमियों से उनके उत्तर के इंतिजार में हैं अमेरीकी नागरिक अधिकार आंदोलन के नेता मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने लिखा है कि ''हिंसा इस ब्रह्माण में बुराईयाँ और हिंसा को बढ़ाती है यह किसी भी समस्या का समाधान नहीं करती।''

इन सारे प्रश्नों का उत्तर तलाश करने के लिए हमें अतीत में जा कर देखना होगा कि क्या देश में ऐसे बुरे हालात पहले भी कभी आये या नहीं, तो जवाब होगा कि नहीं, जुल्म हुआ अन्याय हुआ, फसादात कराये गये, हज़ारों लोगों को गाजर मूली की तरह काटा भी गया, लेकिन जिस बेशर्मी से खुल्लमखुल्ला भरे मज्में में हरिद्वार, रायपुर, देहली की गोविन्दपुरी, यूपी के सोनभद्र और अब प्रयागराज के धर्म संसद में मुसलमानों के नरसंहार, सामाजिक और आर्थिक बहिष्कार की अपील की गयी और भारत को हिन्दू राष्ट्र घोषित करने का संकल्प दिलाया गया और म्यांमार के रोहंगिया मुसलमानों की तरह

बर्ताव का आवाहन किया गया उसने यहां के बुद्वजीवियों, सेना से रिटायर्ड भूतपूर्व आर्मी चीफ और सकारात्मक सोच रखने वाले दूसरे सैन्यकर्मियों, एडवोकेट्स, सेवा निवृति सरकारी अधिकारी और आई0आई0एम0 के टीचर्स और स्टूडेंट्स परेशान हो उठे और फौरन न्यायालय पर भरोसा करते हुए उसका दरवाज़ा खटखटाया और न्यायालय ने भी बिना देरी के अपना काम किया जिसके बाद ही शासन प्रशासन हरकत में आया और इनके दोषी सलाखों के पीछे डाले गये। लेकिन क्या यह इसका पूर्ण समाधान है? क्या इससे माहौल शांतिमय हो जायेगा? क्या हमारा महान देश विश्व पटल पर ताकतवर दिखाई देने लगेगा और अमन व भाई चारे की फिजा क़ायम हो जायेगी? क्या हमारे देश का हर नागरिक देश को विश्व गुरु बनाने की फिक्र में तन मन धन से लग जायेगा और क्या देश की लोकतांत्रिक छवि और संविधान की आत्मा बची रहेगी? देश की धर्मनिर्पेक्ष छवी पर आंच न आये इसके लिए कुछ और ज़रूरी काम करने की सख़्त ज़रूरत है।

आज देश की सबसे बड़ी ज़रूरत यह है कि आम जनमानस में नैतिक और सामाजिक सुधार की अलख जगाई जाय और देश से नफरत का माहौल और सियासत को खत्म करने के लिए अपने बहुसंख्यक वतनी भाईयों से सकारात्मक बात चीत के माध्यम से उनके मन की शंका को दूर किया जाय, शिक्षा–दीक्षा को परवान चढ़ाया जाये ताकि समाज का हर व्यक्ति अपने को सुरक्षित सम्मानित महसूस करे, गंगा जमुनी तहजीब को बचाने और बढ़ाने की हर सम्भव कोशिश की जाय और यह सब तभी मुम्किन है जब हम एक दूसरे की भावना का खयाल रखें हर व्यक्ति अपने धर्म और आस्था के मुताबिक बिना डर के जब और जहाँ चाहे स्वतंत्रा के साथ अपनी उपासना कर सके, अगर हम आम जन मानस में शिक्षा, सुरक्षा, सम्मान, रोजगार का भाव पैदा करने में कामयाब हो गये तो हम सब मिल कर देश को अंधकार में जाने से बचा सकते हैं और इतिहास में अपना भी नाम दर्ज करा सकते हैं। और यह बात हर एक को समझाने की है कि यह देश हम सबका है नफरत की दीमक इस को खोखला कर देगी, इसलिए स्वयं भी इस प्रकार की नफरती भावनावों से दूर रहें और अपने बच्चों को भी बचायें, लेकिन यह बड़े धैर्य का काम है अगर देश में अम्न व भाई चारे का माहौल होगा तो हम भी खुशहाल होंगे और देश भी खुशहाल होगा।

हम चूंकि मुसलमान हैं और हम एक अल्लाह पर ईमान रखते हैं इसलिए ज़ियादा घबराने की ज़रूरत नहीं बल्कि यह उम्मीद रखनी चाहिए कि हालात बदलेंगे और नई रौशनी आयेगी। ज़रूरत है कि हम अपनी कार्य शैली में बदलाव लायें, और अल्लाह से रो रो कर अपने गुनाहों की मॉफी मांगे और हर काम को मेहनत व अमानतदारी से करें और अपनी सफ़ों में इत्तिहाद पैदा करें ताकि अल्लाह हम सब पर और हमारे देश पर कृपा व दया का मामला फरमाये। ◆◇◆

उनका जो फर्ज है वह अहले सियासत जानें
मेरा पैग़ाम मुहब्बत है जहाँ तक पहुँचे

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः मुसलमानों का गैर मुस्लिमों से कभी कारोबारी और कभी सियासी सम्बन्ध रहता है, तो क्या उनको शादी विवाह और दीगर प्रोग्रामों में दावत देना इस्लामी विधान से जायज़ है या नहीं?

उत्तरः इस्लामी शिक्षा में गैर मुस्लिमों को दावत देना और उनको अपने प्रोग्रामों में बुलाना जायज़ ही नहीं बल्कि बेहतर है, अगर इरादा यह हो कि इस प्रकार वह इस्लाम से करीब होंगे, अगर वह इस्लाम कुबूल न करें तो कम से कम इस्लाम और मुसलमानों के बारे में उनका रवय्या नर्म होगा, इस सोच के साथ उनको दावत देना सवाब का जरिया भी होगा, रसूलुल्लाह सल्ल0 को जब इस बात का अल्लाह की ओर से आदेश मिला कि अपने सगे सम्बन्धियों को इस्लाम की ओर बुलायें जैसा कि कुर्आने करीम में है अनुवादः— ''अपने करीबी रिश्तेदारों को डराओ'' तो आप सल्ल0 ने अपनी क़ौम बनू हाशिम को इकट्ठा फरमाया और उनके लिए खाने पीने का प्रबन्ध भी फरमाया (दूर्रे मंसूर 5/181)।

इससे मालूम हुआ कि अच्छी नीयत से गैर मुस्लिमों को बुलाया जाये तो यह सवाब का जरिया होगा और नबी के तरीक़े की पैरवी होगी।

प्रश्नः अगर कोई पापी गुनहगार व्यक्ति खुले आम गुनाह करता हो, उसकी ओर से दावत आ जाये तो कबूल करना कैसा है? उसकी दावत में जाने से गुनाह तो नहीं होगा?

उत्तरः पापी की दावत में शरीक होने से मुतअल्लिक़ तफसीलात हैं, अगर उनकी दावत कुबूल करने और उसमें शरीक होने से सुधार की उम्मीद, या शरीक न होने की वजह से नुकसान का खतरा हो तो अपनी रक्षा के लिए शरीक होने की गुंजाइश है और अगर ऐसा नहीं है तो वह व्यक्ति जो खुलेआम गुनाह करता है तो उसकी दावत कबूल करने से मना किया गया है, फतावा हिन्दिया 5/541 में लिखा है कि खुले आम गुनहगार की दावत कुबूल न की जाये ताकि उसे मालूम हो जाये कि मेरे गुनाह से वह खुश नहीं हैं।

प्रश्नः एक आदमी ने क़सम खाई कि मैं फुलाँ दोस्त की कोई चीज़ नहीं खाऊँगा, बाद में दोस्त ने एक उम्दा खाने की चीज़ गिफ़्ट कर दी, उसने गिफ़्ट पर अपना मालिकाना हक़ समझ कर खा लिया तो क्या ऐसी सूरत में उसकी क़सम टूट गयी और उसको क़सम का कफ़्फ़ारा देना पड़ेगा?

उत्तरः जी हाँ जब दोस्त की किसी चीज़ के न खाने की क़सम खाई थी तो अब खा लेने से उसकी क़सम टूट गयी चाहे उसे गिफ़्ट ही क्यों न कर दिया गया हो, क्योंकि रिवाज में इस तरह की चीज़, देने वाले की ही समझी जाती है इसलिए कफ़्फ़ारा देना अनिवार्य है।

(फतावा हिन्दिया 2/83)।

प्रश्नः एक आदमी ने क़सम खाई थी कि अपने भाई की कोई चीज़ नहीं लूंगा एक चीज़ की ज़रूरत पड़ गई और उसने भाई से कर्ज के तौर पर वह चीज़ ले ली तो क्या इस सूरत में उसकी क़सम टूट गयी और क्या उसको कफ़्फ़ारा देना पड़ेगा?

उत्तरः कर्ज लेने की सूरत में इंसान उस चीज़ का मालिक हो जाता है, इसलिए उसकी न क़सम टूटेगी और न कफ़्फ़ारा देना होगा। (फतावा हिन्दिया)। ◆◇◆

एलाने मिलकियत व अन्य विवरण फार्म-4 नियम-8

प्रकाशन का स्थान	–	नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ–7
प्रकाशन अवधि	–	मासिक
सम्पादक	–	हारून रशीद
राष्ट्रीयता	–	भारतीय
पता	–	नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ–7
मुद्रक एवं प्रकाशक	–	अतहर हुसैन
राष्ट्रीयता	–	भारतीय
पता	–	नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ–7
मालिक का नाम	–	नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ–7

मैं, अतहर हुसैन प्रमाणित करता हूँ कि उपरोक्त विवरण मेरे विश्वास व जानकारी में सही हैं।

काम की बातः- ध्यान पूर्वक पढ़ें

1. ''रहमत'' किसे कहते हैं? अल्लाह तआला की ऐसी विशेषता जिससे दुनिया के सारे इन्सान मोमिन और ग़ैर मोमिन बिना अन्तर के फ़ाइदा उठाएं, हवा, पानी, सूरज, चाँद की रोशनी समान रूप से सबके लिए हैं, यह सब अल्लाह की ''रहमत'' है।
2. ''बरकत'' किसे कहते हैं? कम मात्रा में होने के बावजूद इन्सान की ज़रूरत पूरी हो जाये और वह सन्तुष्ट हो जाये।
3. ''मग़फ़िरत'' किसे कहते हैं? किसी गुनाह पर इन्सान की अल्लाह के यहाँ पकड़ न हो और वह जन्नत का हक़दार हो जाये।
4. ''तक़वा'' किसे कहते हैं? खुले या छुपे हर हाल में अल्लाह की पकड़ से डरने को ''तक़वा'' कहते हैं।
5. ''सब्र'' किसे कहते हैं? मुसीबत और परेशानी के वक़्त अल्लाह के बन्दों के सामने शिकायत न करना बल्कि सहनशीलता के साथ अल्लाह की मदद तलब करना और उससे अज्र व सवाब की उम्मीद करने को ''सब्र'' कहते हैं।
6. ''शुक्र'' किसे कहते हैं? अल्लाह की नेमतों की प्राप्ति के बाद, ज़बान से ''अलहमदुलिल्लाह'' कहना, और हर छोटे बड़े गुनाह से अपने को बचाना। ◆◇◆

सच्चा राही का इक्कीसवाँ वर्ष

सम्पादक

''सच्चा राही'' का पहला अंक मार्च 2002 ई0 में प्रकाशित हो कर आया, इस हिसाब से ''सच्चा राही'' ने अपनी आयु के 20 वर्ष गुज़ार कर 21वें वर्ष में क़दम रखा, नदवतुल उलमा से एक हिन्दी पत्रिका का निकलना वक़्त की ज़रूरत थी जिसको नदवतुल उलमा के ज़िम्मेदारों ने महसूस किया, देश वासियों की बड़ी संख्या बल्कि पूरे उत्तरी भारत में हिन्दी भाषा का चलन है, इसमें मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम का कोई अन्तर नहीं है। अल्लाह का प्याम अल्लाह के बन्दों तक पहुँचना ज़रूरी है, हमारे बुज़ुर्ग और अभिभावक हाफ़िज़ हारून रशीद साहब रह0 ने पहले दिन से ''सच्चा राही'' की ज़िम्मेदारी संभाली, इस ज़िम्मेदारी को भली भांति मरहूम ने अदा किया, डॉक्टर साहब अगरचि वृद्धिावस्था में थे और शारीरिक रूप से विवश थे परन्तु दिमाग़ पूरा काम कर रहा था। हर समय चिन्तित रहते थे कि ''सच्चा राही'' का काम पिछड़ने न पाये, डॉ0 साहब इस फ़ानी दुनिया को अलवदा कह कर अपने रब के पास पहुँच गये, ''सच्चा राही'' की तैयारी में जो लोग डॉ0 साहब के सहायक थे उनका कर्तव्य है कि वह डॉ0 साहब के दिखाये हुए रास्ते पर चल कर ''सच्चा राही'' को अच्छा से अच्छा बना कर पेश करें ताकि उसकी रौशनी दूर तक पहुँचे, ''सच्चा राही'' के पहले अंक में नाज़िम नदवतुल उलमा मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी ने ''अपनी बात'' के अन्तर्गत लिखा था, ''अल्लाह के नाम से यह हिन्दी परचा ''सच्चा राही'' शुरु कर रहे हैं जिस का मक़सद ''अल्लाह के बन्दों को अल्लाह की याद दिलाना है और उसकी बन्दगी कराना है और उसकी रहमत व करम का मुस्तहिक बनने की तरफ़ तवज्जुह दिलाना है'' सच्चा राही का यही उद्देश्य और लक्ष्य है जिसको सामने रख कर हमें काम करना है। अल्लाह तआला से हमारी दुआ है कि वह मदद फ़रमाये ताकि उसके उद्देश्य को हम भलीभांति पूर्ण कर सकें। अपने सम्बन्धियों और साथियों से अनुरोध है कि वह अच्छी भाषा और प्रभावित शैली में निबन्ध और लेख लिख कर ''सच्चा राही'' के उद्देश्य को पूरा करें।

◆◇◆ धन्यवाद!

सच्चा राही इक्कीसवें वर्ष में

सच्चा राही सच्चा है
सच्ची बातें लिखता है
सच्ची अच्छी बातें लिखते
वर्ष इक्कीस में पहुँचा है
लिखता रहेगा इसी तरह
सर पर उस के नदवा है
मदद ख़ुदा की उस को हासिल
क्योंकि वह तो सच्चा है
नदवा एक इदारा है
दीन की ख़िदमत करता है

अमानत

—नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

जज साहब के सामने एक मुकदमा पेश होता है मुद्दई का दावा है कि मैंने एक व्यापारी के पास अपनी अमानत रखवाई थी मगर उसने ख्यानत की और अमानत का साफ इन्कार कर दिया।

जज साहब ने व्यापारी को तलब किया और पीडित से पूछा कि क्या ये वही व्यक्ति है जिसके पास तुमने अपनी अमानत रखवाई थी? मुद्दई ने कहा जी साहब! ये वही आदमी है।

मुंसिफ ने मुद्दई से पूछा, क्या तुम्हारे पास इसका कोई गवाह है? उसने कहा नहीं साहब! अफसोस इसी बात का है कि जब मैंने इसको अपना माल सौंपा था तो कोई आदमी वहां मौजूद न था।

जज साहब कहने लगे कि ऐसे मामले में लोग बड़ी लापरवाई बरततें हैं, फिर परेशान होते हैं, जबकि प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने इस पर बहुत जोर दिया है कि लेन देन के मामले लिख लिये जाएं ज़बानी न किये जाएं बल्कि किसी को गवाह बना लिया जाए। और नबी के कहने का आशय यही कि भूल चूक इंसानी फितरत में तो है ही इसके अलावा आदमी का भी कभी—कभी भरोसा नहीं कि कब शैतान के चंगुल में फंस कर बेईमानी पर उतर आये।

पवित्र कुर्आन में उधार से सम्बन्धित हैः ऐ ईमान वालो! जब तुम किसी निर्धारित समय सीमा के लिए आपस में कर्ज़ का मामला करो तो उसे लिख लिया करो।

खैर! जज साहब ने इस केस में चिन्तन शुरु किया। प्रथम दृष्टि से ये प्रतीत हो रहा था कि मुद्दई सच बोल रहा है और व्यापारी झूटा है। जज साहब को भी इसका आभास था मगर न्यायालाय सबूत के आधार पर चलता है न कि आस्था और जनभावना को ध्यान में रख कर। जैसा कि कुछ निर्णय इसी आधार पर लिये जाने की खबर है।

पहले दौर के और अब भी कई मुंसिफ बड़ी चतुराई से पीडित को न्याय दिलवा देते हैं, अतः जज साब के दिमाग़ में एक आइडिया आया और उन्होंने मुद्दई से पूछा कि तुमने धन कहाँ सौंपा था? मुद्दई ने कहा, मैं यात्रा हेतु निकलने वाला था तो मैंने सोचा कि यदि ये माल ले कर निकलूंगा तो सम्भव है कि लूट लिया जाऊँ, चूँकि मैं इस व्यापारी के यहां से सौदा सल्फ खरीदता था और संयोग से वह दिख भी गया तो मैंने इसे विश्वसनीय समझ कर अपना माल इसके हवाले कर दिया।

जज साहब कहानी सुन कर झल्ला उठे और कहा कि इसकी डिटेल नहीं बस ये पूछ रहा हूँ कि जहां तुमने माल दिया था, वह कौन सी जगह थी? मुद्दई ने कहा, जहां मैने माल सौंपा था वह केवल एक पेड़ था जिसके नीचे मामला हुआ। जज ने कहा, इसका मतलब पेड़ गवाह है, ऐसा करो कि वहाँ जाओ और उस पेड़ से पूछो, शायद अल्लाह वहां तुम्हारे लिए कोई रास्ता निकला दे और तुम सच्चे साबित हो जाओ।

शेष पृष्ठ..36...पर

–पिछले अंक से आगे.....

घरेलू मसायल

–मौलाना बुरहानुद्दीन सम्भली रह0

–अनुवादः मौ0 मु0 जुबैर अहमद नदवी

बहुविवाह की हिकमतें:–

विवरण के बाद मुनासिब मालूम होता है कि इस कानून की कुछ हिकमतें और फायदे भी जिक्र कर दिये जाएं ताकि इस में सरासर बुराई देखने वाली आँख के सामने क़ानून की भलाई के कुछ ''पहलू'' आ जाएं लेकिन ये हकीकत नहीं भूलनी चाहिए कि अल्लाह तआला के हुक्मों की सारी मसलहतों और हिकमतों का पता चला लेना इंसानी अक़्ल की पहुँच से बाहर है इसी वजह से वो इस का जिम्मेदार नहीं करार दिया गया कि हिकमतें तलाश कर के अमल किया करे, इसके अलावा ये बात बिल्कुल ज़रूरी नहीं है कि जिस हुक्म की जो मसलहत इंसानी अक़्ल में आई वही उस हुक्म के लागू होने का कारण हो, हुक्मों की मसलहतें बयान करने का चलन पूर्वजों से जारी है क्यों कि इससे शरीयत को समझने में काफी मदद मिलती है इसलिए चंद मसलहतों को जिक्र कर देने में कोई हरज नहीं मालूम होता।

यहाँ बहुविवाह की बस उन चंद मसलहतों को ही पेश किया जा रहा है जो मामूली गौर व फिक्र से ही सामने आ जाती हैं जिनमें कुछ अस्थाई और वक़्ती और कुछ स्थाई और अबदी (शास्वत) हैसियत रखती हैं देखें:–

1). मर्दों से औरतों का अनुपात बढ़ जाने की स्थिति में मुनासिब हल है वरना नैतिक खराबियां फैलना निश्चित (कयामत के करीब औरतों की संख्या में बढ़ोत्तरी बल्कि बहुसंख्यक हो जाने की भविष्यवाणी की गयी है हालात देखने व विभिन्न देशों के अंदर मर्द–औरत की संख्या के अनुपात से ये भविष्यवाणी जल्द ही सच होती नज़र आ रही है।)

2). विधवा और तलाक़ शुदा औरतों की आसानी से शादी हो जाने की उम्मीद, क्योंकि दूसरे निकाह के वक़्त आमतौर पर वो शर्तें नहीं लगायी जातीं जो पहले निकाह के वक़्त मर्द लगाया करते हैं और उस वक़्त उनकी पसंद का स्टैण्डर्ड भी पहले से नीचे आ जाता है इस परिस्थिति को सामने रखते हुए कहा जा सकता है कि अचानक तलाक़ हो जाने की वजह से जो भयानक परिस्थितियां पैदा हो जाती हैं कि औरत देखते देखते बिल्कुल असहाय बन जाती है इस कठिनाई का भी एक हद तक हल इसी कानून में मिलता नज़र आता है।

3). बदसूरत गरीब और इसी तरह वो औरतें जिनका निकाह मौजूदा जमाने में एक ''समस्या'' बन गया है उनकी शादी ऐसे मर्दों से हो जाना ज़ियादा आसान है जिनके यहां पहले से बीवी मौजूद है और किसी उचित वजह से वो दूसरे निकाह के इच्छुक या जरूरतमंद हैं इस तरह एक अहम मुश्किल हल भी निकल आता है।

यहाँ रह रह कर एक सवाल दिमाग में पैदा होता है कि बहुविवाह की आलोचना करने वालों की सारी हमदर्दियाँ आमतौर पर पहली बीवी के

साथ ही होती हैं सारी सहानुभूति की हकदार वही क्यों करार दी जाति है जबकि दूसरी बीवी भी तो बहरहाल ''औरत'' ही होती है अगर उसके साथ पति पक्षपातपूर्ण व्यवहार करता है (अगरचे किसी के साथ भी पक्षपातपूर्ण व्यवहार शरीयत में सख़्त मना है) तो हर हाल में वो औरत के साथ ही बेहतर व्यवहार होगा वो भी जाहिर है कमजोर होती है तो फिर सवाल पैदा होता है कि ये हमदर्दी की कौन सी किस्म है कि कुछ तो इस किस्म की हमदर्दी के काबिल समझी जाएं और कुछ के साथ अच्छा व्यवहार करना मानो कमजोर औरत के साथ अच्छा व्यवहार कहलाने का हकदार ही ना करार दिया जाए जाहिर है कि वही औरत किसी मर्द की दूसरी बीवी बनना खुशी से या ना चाहते हुए भी गवारा करती है जो इस जैसे मर्द की अकेली बीवी ना बन सकी थी और अब उसे निकाह के बाद कुछ राहतें और आराम हासिल हो गया जिनसे अब तक वो महरूम थी और शायद आगे भी महरूम रहती तो इसमें अगर सही बुद्धि से देखा जाए तो क्या हरज है।

4). जंग या ऐसी ही किसी आपातकाल में विधवा या बे सहारा हो जाने वाली शरीफ औरतों को गलत रास्ते पर चल पड़ने से बचने का जरिया और उनके सपोर्ट का साधन।

5). खुशहाल तंदरुस्त और अच्छे खान–पान वाले मर्दों की यौनेच्छा का पूरा होना आमतौर पर एक बीवी से ज़रूरी नहीं इस वजह से ऐसे लोग गलत रास्ते का शिकार हो जाते हैं या हो सकते हैं उनके लिए दूसरा निकाह मानो उनकी ज़रुरत का इंतजाम और सही रास्ता है।

6). स्थायी बीमारियां या बाँझ औरतों के पतियों की जायज़ और प्राकृतिक इच्छा पूरी करने का सही तरीका बल्कि उनके लिए अहम ज़रुरत जिसका लेहाज न करना उन पर जुल्म होगा। जिन धर्मों या जिन देशों के कानून में बहुविवाह पूरा प्रतिबंधित है वहां ऐसी प्राकृतिक जरूरतों के पेश आ जाने पर कैसी कैसी अनैतिक बल्कि अमानवीय हरकतें करनी पड़ जाती हैं इसका अंदाजा इस वाकिये से भी लगाया जा सकता है कि मेरठ (उ०प्र०) की एक पढ़ी लिखी हिन्दू महिला (टेलीफोन ऑपरेटर) ने एक बच्चे को एक अस्पताल (एम्स दिल्ली) से अपहरण किया और उसे अपना बच्चा सिर्फ इसलिए जाहिर किया कि उसके पति ने औलाद न होने के कारण तलाक़ लेने के लिए मुकद्दमा दायर कर दिया था। क्योंकि बीवी की मौजूदगी में वो (हिन्दू विधि के अनुसार) दूसरी बीवी नहीं रख सकता था। ये वाकिया अख़बारों में खूब छपा (''कौमी आवाज़'' 10 जनवरी 1979)

7). कभी कभी ऐसे हालात पैदा हो जाते हैं कि मियां बीवी के सम्बन्ध खराब हो जाते और अच्छे तौर पर निबाह ना हो सकने के बावजूद खानदानी दबाव या किसी मस्लहत से पति अपनी बीवी को तलाक़ नहीं देता या तलाक़ देना मुनासिब नहीं समझता (और बीवी भी तलाक का कलंक बर्दाश्त नहीं कर सकती) लेकिन पति उस बीवी से विवाह का व्यावहारिक सम्बन्ध स्थापित रखने पर भी अपने आपको तैयार नहीं कर पाता।

इस तरह के मुश्किल हालात में दूसरे निकाह के अलावा पति की जायज़ भावनाओं

और प्राकृतिक इच्छाओं को पूरा करने का और कोई हल नहीं, इस हालत में भी दूसरे निकाह की इजाज़त ना देना उस पर जुल्म और उसको गुनाह के रास्ते पर डाल देने के बराबर होगा।

8). किसी खास वजह या आकस्मिक कारण से भी कभी ऐसे हालात पेश आ जाते हैं कि शादी शुदा मर्द को किसी गैर औरत से हार्दिक सम्बन्ध हो जाता है (और दूसरी तरफ़ से भी इसकी सकारात्मक प्रतिक्रिया होती है) अगर इस ज़रुरत को निकाह के जायज तरीके नहीं किया जाता है तो इसकी पूरी संभावना है कि ना जायज़ व हराम तरीके से ये इच्छा पूरी की जाये और इसके लिए क़त्ल जैसे जघन्य अपराध किया जाये ऐसी सूरत में दूसरी शादी की इजाज़त ना होने की वजह से मर्द अपनी बीवी से छुटकारा हासिल करने के लिए कत्ल जैसे निर्शंस और जालिमाना कदम उठाने से भी संकोच नहीं करता और ऐसे अपराध को अंजाम देना कोई काल्पनिक बात नहीं बल्कि ऐसी घटनाएं होती रहती हैं 1 अगस्त 1975 के ''सिद्क–ए–जदीद'' (उर्दू पत्रिका) में एक बड़े डॉक्टर के केस की कार्यवाही और उसके फैसले की तफ्सील छपी है जिसमें ये है कि डॉक्टर ने अपनी गर्लफ्रेंड सिक्रेट्री से शादी करने के लिए अपनी बीवी को प्रोफेशनल कातिलों से मरवाया जिन्होंने पति डॉक्टर की मौजूदगी में मोटर पर सवार उसकी बीवी को चाकुओं और खंजरों से इतने और ऐसे जख्म लगाए कि वो बच ना सकी फिर खुद ही बीवी के क़त्ल की रिपोर्ट लिखा दी कि उसे किसी ने मार डाला मगर जल्द ही भांडा फूट गया अतः डॉक्टर को उम्र कैद की सजा हुई और उसकी गर्लफ्रेंड को भी (जिल्द 25 संस्करण 35) ।

और सब पढ़े लिखे लोग जानते हैं कि इस्लामी कानून के अनुसार किसी शादी शुदः का दुष्कर्म में लिप्त हो जाना कितना संगीन अपराध है उसकी सजा पत्थरों से मार मार कर मौत के घाट उतार देने के सिवा कुछ नहीं।

अब इस किस्म की परिस्थिति पर विचार करके फैसला किया जाए कि दूसरी शादी से मर्द को रोक कर ''दुष्कर्म'': जैसे शर्मनाक जुर्म की राह दिखा देना (कि जिसके नतीजे में जान भी जा सकती है) बेहतर हो गा? या जायज़ और शरीफों की तरह निकाह कर के इस इच्छा को पूरा करना?

बहुविवाह की बुराई करने वाला दिमाग़:–

यहाँ इस कड़वी सच्चाई का इजहार किये बिना नहीं रहा जाता कि बहुविवाह पर आपत्ति करने वाली सोच असल में वह है जो ''बलात्कार'' जैसे अश्लील और शर्मनाक अपराध को अपराध नहीं समझती और उसमें उसे कोई खास बुराई नजर नहीं आती (और ये कोई काल्पनिक बात नहीं है बल्कि सच्चाई है पश्चिमी देशों जिनकी नक़्काली में ''बहुविवाह'' की इजाज़त पर आपत्ति की जाती है वहां असीमित औरतों को ''रखेल'' के तौर पर रखना जुर्म नहीं है इसके अलावा ''कॉल गर्ल'' ''गर्ल फ्रेंड'' और न जाने किस किस नाम से बे शर्म औरतों की फौज दर फौज मर्दों की हवस का शिकार बनने के लिए हर वक्त मौजूद रहती है इसलिए बहुविवाह की उन्हें ज़रुरत ही नहीं।

.....जारी.....

❖❖❖

कामयाबी का रास्ता

डॉ0 सै0 अबूज़र कमालुद्दीन

वक़्त, एक बहते हुए पानी के समान है जिसको रोका नहीं जा सकता है, हमें हर तरह के हालात में सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ना है, हिन्दुस्तानी मुसलमान पिछले सत्तर साल से ख़ौफ़ और असंतोष के माहौल में जी रहे हैं, जिसने उनके अन्दर से हिम्मत व हौसला छीन लिया है और उनके अन्दर आगे बढ़ने की क्षमता समाप्त हो गई है, यह किसी ज़िन्दा क़ौम का तरीक़ा नहीं हो सकता है, दुश्मनों का बड़ा से बड़ा जत्था जितना नुक़सान नहीं पहुँचा सकता वह केवल इस एहसास ने पैदा कर दिया है, एक ज़िन्दा क़ौम जीते जी मुर्दा नज़र आती है, क्योंकि उसके अन्दर जीने और आगे बढ़ने का हौसला ख़त्म हो चुका है, हम दूसरों के सहारे और मदद के बिना एक क़दम चलना नहीं चाहते हैं, यह क़ैसी मानसिकता? यह कैसा मनोविज्ञान है? अल्लाह ने हमें स्वस्थ्य शरीर प्रदान किया है, बौद्धिक पथ प्रदर्शन दिया है, हमारे हाथ पाँव सलामत हैं, फिर हम ख़ुद को इतना कमज़ोर और बेसहारा, तुच्छ, और हीन क्यों समझते हैं? मुझे मालूम है हालात सख़्त हैं विरोध और शत्रुता करने वालों का एक समूह हमें उचक लेना चाहता है उनके इरादे और मनसूबे बहुत ख़तरनाक हैं, वह बहुत संगठित, बड़े साधन वाले और शक्तिवान हैं, पूरी स्टेट मशीनरी और मीडिया उनकी पुश्त पनाही कर रही है, दुन्यावी हालात भी उनके लिए अनुकूल हैं लेकिन यह तारीख़ में पहली बार नहीं हुआ है, इससे पहले भी ऐसे हालात आते रहे हैं। क़ौम बार–बार आज़माईशों से दो चार होती रही है, और अब तक न जाने वह आग का कितना दरया पार कर चुकी है, वर्तमान समय और हालात पर भी यक़ीं मोहकम, अ़मल पैहम, मुहब्बत फ़ातेह आलम के जज़्बे के साथ क़ाबू पाया जा सकता है, ज़रूरत है अपने को जाँचने और परखने की अपनी त्रुटियों और कमियों की आलोचना और ईमानदारी के साथ जायेज़ा लेने की और पूरी ईमानदारी और निः स्वार्थता के साथ उसके सुधारने की, हम दूसरों की कमज़ोरियों और कमियों पर तो बहुत सख़्त होते हैं और अपनी कमज़ोरियों और कमियों को नज़रअंदाज़ कर देते हैं, यह जांचना नहीं हुआ, बल्कि आरोप लगाना हुआ, यह हमारी समस्या का समाधान नहीं है हममें से हर व्यक्ति ज़िम्मेदार है और हर व्यक्ति जवाब देय है, व्यक्ति से ख़ानदान बनता है, खानदान से बिरादरी बनती है, बिरादरी से क़ौम बनती है, अतः हर व्यक्ति को, हर ख़ानदान को, हर बिरादरी को और इसी प्रकार पूरी क़ौम को अपने हिस्से की ज़िम्मेदारी, ईमानदारी से निभानी होगी, तभी समस्या का समाधान होगा, वरना हम चाहें कि हमारे हिस्से की ज़िम्मेदारी कोई और निभाये और हम केवल आदेश दें, आलोचना करें, टिप्पणी करें या निश्चिंत हो कर ख़ामोश तमाशाई बने रहें तो सदियाँ

बीत जायेंगी, हालात में कभी सुधार नहीं होगा और हम सब हालात की भेंट चढ़ जायेंगे, इसलिए अगर आपके ज़ेहन में सुधार का कोई मनसूबा है, बेहतर उत्तमता की कोई सूरत है, चाहे वह बात कितनी छोटी हो और स्थानीय स्तर पर ही हो रही हो, वहीं से उसको शुरु कीजिए, इस तरह छोटी छोटी कोशिशें बड़ी कोशिश की भूमिका बन जायेंगी।

टालिसटाई की एक कहानी है जिसमें तीन सवाल पूछे गये हैं, कौन सा वक़्त सबसे अच्छा है? कौन सी जगह सबसे अच्छी है? कौन सा काम सबसे अच्छा है? इन सवालों का फ़लसफ़ियाना (दार्शिनिक) जवाब दिया जा सकता है, मगर टालिस्टाई ने इसका बहुत जँचा तुला और साफ़ जवाब दिया है, उसके ख़्याल में जिस वक़्त में हम हैं, हमारे लिए वही वक़्त सबसे अच्छा है, इसलिए कि जब हम नहीं थे या जब हम नहीं होंगे, उस वक़्त हमारी कोई ज़िम्मेदारी भी नहीं होगी, हमारी ज़िम्मेदारी आज और अभी की है, क्योंकि इस वक़्त हम हैं, ज़िन्दा हैं लिहाज़ा वक़्त की अहमियत ज़िन्दों के लिए होती है, मुर्दों के लिए नहीं होती, लिहाज़ा इस वक़्त को अपनी ज़िन्दगी और काम करने की मोहलत को ग़नीमत जानते हुए उसको उत्तमता से प्रयोग करना सफल जीवन का रहस्य है। हदीस में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः—

पाँच चीज़ों को ग़नीमत जानो— मौत से पहले ज़िन्दगी को, बुढ़ापे से पहले जवानी को, बीमारी से पहले सेहत को, तंगी से पहले फ़राख़ी (सम्पन्नता) को और मशगूलियत व्यस्तता से पहले फ़ुरसत को, वक़्त में ज़िन्दगी है अल्लाह ने कुरआन में क़सम खा कर कहा कि सारे इनसान घाटे में हैं, अतिरिक्त उनके जो ईमान लाये, और अच्छे काम करते हैं, और सच्चाई और सब्र का उपदेश देते हैं (सूरतुल अस्र)।

दूसरी चीज़ है उत्तम काम प्रस्तुत करना क्योंकि यही हमारे काम का मैदान है और इसी काम के मैदान में हमको अपनी विशेषता और पूर्णता का प्रदर्शन करना है, इस समय भारत वर्ष के जिस नगर, गाँव, महल्ले बस्ती और स्थान पर भी हमारा कर्यक्षेत्र है वही हमारा काम का मैदान है अगर हम गाँव के मैदान में क्रिकेट में सेंच्युरी मारने के योग्य हो जायेंगे तो कल लार्डस के मैदान में भी सेंच्युरी मार सकते हैं, अगर गाँव के स्कूल में टाप करेंगे तो बोर्ड के इम्तिहान में टाप करने का चान्स है। अगर हम स्थानीय बाज़ार में कामयाब होते हैं तो बड़े बाज़ार में भी मुक़ाबला कर सकते हैं, इसलिए पहले अपने पैतृक और पैदाईशी जगह पर अपनी बुन्यादी क्षमताओं को परवान चढ़ाइये, आगे का रास्ता खुद ब खुद खुलता चला जायेगा, पहले कोई जौहर स्थाई तौर पर उभरता है फिर वहां से विस्तृत वातावरण में उड़ान की संभावनायें पैदा होती हैं।

तीसरी और अन्तिम बात यह है कि कोई काम छोटा या बड़ा नहीं होता जिस काम को करें भली भांति और कुशलता के साथ करें ताकि लोग आपकी ओर आकृष्ट हों फिर वह काम आपकी सफलता का ज़ीना बनेगा। आप दुन्या के किसी भी बड़े और कामयाब इन्सान का

जीवन चरित्र उठा कर पढ़ लें आपको मिलेगा कि उसने जो काम किया, इस लगन इस ईमानदारी , इस खूबी, इस लीन्ता और इस परिश्रम से किया कि लोगों ने उसको अपना रोल मॉडल बना लिया, यही जिन्दगी की सफलता का रहस्य है। हारवर्ड बिज़नेस स्कूल का एक विद्यार्थी अपने आवश्यक ख़र्च के लिए एक बड़े उद्योगी के घर ''हाऊस कीपिंग'' का काम करता था कि उस उद्योगी की नज़र उसके काम करने के तरीक़े पर पड़ी, उसने उस विद्यार्थी को अपने क़रीब बुलाया और उसके बारे में जानना चाहा, उसने बताया कि वह हार्डवर्ड बिज़नेस स्कूल में मैनेजमेन्ट का कोर्स कर रहा है और अपने ज़रूरी ख़र्च के लिए पार्ट टाईम उसने यह काम शुरु किया है, वह उद्यमी यह जान कर अचम्भे में आ गया कि उसके हाऊस कीपिंग गुरुप में उच्च श्रेणी का पढ़ा लिखा आदमी है और वह यह छोटा सा काम उत्तम ढंग से कर रहा है जिससे उसकी लगन, दिलचस्पी, मेहनत और ईमानदारी और काम को भलीभांति करने की क्षमता का अनुभव होता है, इसलिए तत्काल उस व्यक्ति को उस काम से हटा कर अपनी कम्पनी में एक बड़े पद पर बहाल कर दिया इससे साबित होता है कि अगर आप में कोई ख़ूबी और कमाल होगा तो वह काम छोटा हो या बड़ा एक दिन ज़ाहिर हो कर रहेगा, और यह चीज़ एक दिन आपको सुरख़ुरु कर देगी हमें यह गुण सीखना होगा, इसी ज़रिये से मौजूदा ज़िल्लत व दुर्दशा से बाहर आने की राह तलाश करनी होगी।

❖❖❖

अमानत.....

मुद्दई जज साहब का आदेश सुन कर हक्का बक्का हो गया कि ये कौन सी बात हुई। मगर जब उन्होंने सख्ती से अदालत के हुक्म की तामील करने को कहा तो मुद्दई बेचारा हैरान परेशान इजलास से बाहर आ गया।

इधर जज साहब ने उस व्यापारी से कहा कि तुम यहीं मेरे पास तब तक बैठे रहो जब तक कि मुद्दई यहां आ न जाए। ये आर्डर देकर जज साहब दूसरे केसेज को देखने में बिजी हो गये। थोड़ी देरे बाद उन्होंने सहसा व्यापारी से पूछ लिया कि क्या वह आदमी उस पेड़ तक पहुँच गया होगा? व्यापारी के मुँह से निकला नहीं।

बस क्या था, न्यायधीश महोदय ने कहा, ऐ बदमाश! अब तो सिद्ध हो गया कि तूने ही अमानत में ख्यानत की है, अन्यथा तुम्हें कैसे पता कि पेड़ कितनी दूरी पर है? पर व्यापारी के मुँह से कोई बोल न फूट रहे थे, अंन्ततः हर तरफ़ से घिरता देख उसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया और उस पीडित को उसका माल सौंप दिया।

किताबों में लिखा है कि इस जज का नाम अयास बिन मुआविया था, जो अपने दौर में महान न्यायधीशों में शुमार थे। जिनके निर्भिक निर्णय से उस समय का बादशाह भी थर्राता था तो प्रशासनिक अधिकारियों व कर्मचारियों की हिम्मत न होती कि कोई और गैरक़ानूनी काम कर सकें।

सचमुच जब अल्लाह वाले पॉवर पाते हैं तो इन्साफ करते हैं, और जब विकृत मानसिकता वालों को ताकत हासिल होती है तो बेईमानी पर उतर आते हैं।

◆◇◆

–पिछले अंक से आगे.....

ऐकता का संदेष्टा

–अल्लामा सैय्यद सुलैमान नदवी रह0–
अनुवादकः इं0 जावेद इक़बाल

(रसूले वेहदत)

इस्लाम की शिक्षाः–

इस्लाम में धर्म कर्म और दुनियादारी अलग नहीं–

अन्तिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के द्वारा जब इस्लाम धर्म की पुनः स्थापना की गई तो दुनिया का बहुत पुराना भ्रम समाप्त हो गया और मानवता को फिर याद आया कि धर्म और दुनिया अलग अलग नहीं हैं अर्थात यह दो भिन्न चीज़ें नहीं हैं, वस्तुतः धर्म ही दुनिया है और दुनिया के सभी कार्य धर्म हैं। धर्म में विकृत इच्छाएं सम्मिलित हो जाने पर वह दुनिया समान हो जाता है और दूसरी ओर दुनिया के कार्य ईश्वर की इच्छानुसार उसके आदेशों का पालन करते हुए यदि किये जायें तब वह धर्म बन जाते हैं। इस प्रकार जो भावना इन दोनों के मध्य अन्तर स्थापित करती है वह मनुष्य का दृष्टिकोंण है। यदि दृष्टिकोण ठीक है तो फिर यह अन्तर बना रहता है और धर्म व दुनिया एक दूसरे के पूरक बन जाते हैं। वही शासन और सत्ता के कार्य जिन्हें दुनिया समझा जाता है, यदि ईश्वर की इच्छा एवं आज्ञा का पालन करते हुए किये जायें तो धर्म हैं। धन और सम्पत्ति की प्राप्ति दुनिया के कार्य माने जाते हैं परन्तु यदि ईश्वर के बन्दों की सेवा एवं परोपकार के उद्देश्य से किये जायें तो धर्म की परिधि में आ जाते हैं। आत्म हत्या पाप है लेकिन ईश्वर के आदेशों की स्थापना हेतु प्राणों की आहूति शहादत है।

इस्लाम के अन्तिम संदेष्टा सर्वप्रिय हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने इस प्रकार धर्म को व्यवहारिक स्वरूप प्रदान कर दिखाया। उनकी नमाज़, ज़कात (निर्धारित दान), रोज़ा (उपवास) हज, रात्रि की साधना, पवित्र कुर्आन का पाठ, सत्य का प्रचार, अत्याचार का विरोध, शासकीय कार्यों की व्यस्तता अर्थात उनके जीवन का प्रत्येक कार्य धर्म भी था और दुनिया भी। वह एक ही समय में शासक भी थे और संदेष्टा भी। उनके बाद उत्तारिधकारियों एवं अनुयाइयों ने भी इस दृष्टिकोण को स्पष्ट रूप से अपनाया। उन लोगों के कार्यों में भी वही भावना दिखाई पड़ती है जो धर्म और दुनिया के मिलाप से पैदा हुई थी और पवित्र कुरआन की शिक्षानुसार थी। कुरआन की अनेक आयत में मानव कृत कर्मों के पुरूस्कारों को धर्म और दुनिया दोनों से सम्बद्ध बताया गया है अर्थात मनुष्य को अच्छे और बुरे कर्मों का फल इस दुनिया में भी प्राप्त होता है और परलोक में भी मिलेगा। यह दृष्टिकोण जब तक मुसलमानों के समक्ष रहा और जब तक उन्होंने इसकी भावना को समझा उनके सभी कार्य पूर्ण रूप से प्रतिभाशाली थे, उनकी दुनिया धर्म थी और धर्म दुनिया था।

मुसलमानों के पतन का वास्तविक कारणः–

जब से इस दृष्टिकोण में परिवर्तन आया मुसलमानों के सभी कार्य असंतुलित हो गये और उनके जीवन में इस्लाम के स्थान पर यहूदियत और ईसाइयत (एवं हिन्दुत्व) का रंग झलकने लगा। उन्होंने भी अन्य

मतों की भांति धर्म और दुन्या को पृथक पृथक स्वरूप दे दिया। कुछ लोग तो खुले आम धर्म को त्याग कर दुन्या के लोभ में व्यस्त हो गये और यहूदी विचारधारा की शरण में चले गये। कुछ लोगों ने दुनिया को त्याग करके एकांत की तपस्या एवं साधना को प्राथमिकता दी, इस प्रकार ईसाइयों के राहिबों और बौद्ध भिक्षुओं के मार्ग पर चल पड़े। और फिर पूर्व काल की पुनरावृत्ति आरम्भ हो गई। धार्मिक गुरु दुन्या से अलग हो गये और दुन्या की सत्ता पर शासक और सम्राट बैठ गये। इस विभाजन ने मुसलमानों की संगठित शक्ति को जिस प्रकार कमज़ोर और छिन्न भिन्न किया उसके प्रमाण ऐतिहासिक घटनाओं के अतिरिक्त आज भी वर्तमान समय में स्पष्ट दिखाई देते हैं। जिसको दार्शनिक एवं इतिहासकार सहित कोई भी बुद्धिजीवी एवं जागरूक व्यक्ति भली भांति समझ सकता है।

आज मुसलमान कहे जाने वाले लोग या तो यहूदी विचारधारा से प्रभावित हैं या ईसाई विचारों के अधीन जीवन व्यतीत कर रहे हैं। हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का मार्ग वर्तमान समय में उनकी आँखों से अधिकांशतः ओझल है जिसके कारण प्रशासक वर्ग एवं मस्जिद के इमाम दो अलग गुट समझे जाते हैं। जब कि मुसलमानों का शासक और इमाम एक ही था, वस्तुतः वही सेनापति होता था और वही नमाज़ का इमाम भी था।

इस्लाम की ओर आओः—

मुसलमानों ने हज़रत मुहम्मद सल्ल0 द्वारा प्रस्तुत शिक्षा को त्याग दिया है और धर्म व दुनिया की सीमाएं निर्धारित कर ली हैं। जिसके फलस्वरूप वह शासक और ईश्वर दो सम्राटों के अधीन जीवन व्यतीत कर रहे हैं। शासन, व्यापार, खेती खलियानी, ज्ञान, विज्ञान, तकनीक इत्यादि को दुनिया के कार्य समझते हैं और नमाज़, रोज़ा आदि को धर्म के कार्य समझते हैं। जब कि शुद्ध विचारों के साथ किये गये सभी कार्य पूर्णतयः धर्म हैं और यदि विचार शुद्ध न हों, मन में छल और कपट हो तो रात भर की नमाज़ और दिन भर का रोज़ा सब व्यर्थ है।

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने धर्म के शुद्ध स्वरूप को जिस प्रकार प्रस्तुत किया है उसमें धर्म और दुन्या का अन्तर यदि है भी तो कार्य की विशेषता के आधार पर नहीं है, बल्कि मन के विचारों के आधार पर है। यही कारण है कि इस्लाम की शिक्षा के फलस्वरूप धर्म और सत्ता दोनों का उदय एक साथ हुआ। बुद्ध काल में धर्म अलग था और दुन्या अलग थी। इस्राईल वंशियों को धर्म के चार वर्ष बाद सत्ता मिली थी। ईसाइयों को हज़रत ईसा अलै0 के सैकड़ों वर्ष बाद सत्ता प्राप्त हुई थी। परन्तु आप मुहम्मद सल्ल0 ने जिस दिन मदीना में धर्म का मंच सजाया उसी दिन सत्ता का तख़्त भी बिछ गया और उसी समय आत्मा की शुद्धि, व्यापार, राजनीति, ज्ञान, शिक्षा अर्थात जीवन के समस्त संकाय स्थापित हो गये। तीस वर्ष के अन्दर फारस की खाड़ी से मृत सागर तक धर्म, नैतिकता, न्याय, कर्तव्य, भाईचारगी, सभ्यता आदि से दुन्या संवर गई। अन्य सभी सम्प्रदायों एवं वर्गों के साथ मिल कर इस्लाम के अनुयाइयों ने ऐसे मेल जोल की आधारशिला स्थापित की जिसका उदाहरण दुन्या ने अन्यत्र कभी प्रस्तुत नहीं किया। इस थोड़े से समय में इनक़लाब का प्रमुख कारण

यह था कि धर्म और दुन्या के कार्यों का विभाजन समाप्त कर दिया गया था। आप सल्ल0 के द्वारा पुनः स्थापित इस्लाम में प्रत्येक कार्य धर्म था। शर्त थी तो बस इतनी कि सभी कार्य ईश्वर की इच्छानुकूल शुद्ध विचारों सहित उसकी प्रशंसा के लिए हों।

मुसलमानों की वर्तमान तबाही और पतन का वास्तविक कारण यही हुआ कि उन्होने दृष्टिकोण को भुला दिया। शासक को सत्ता एवं दुन्या के कार्यों का ज़िम्मेदार बना दिया गया। और कुछ लोगों ने मस्जिदों, दरगाहों और मठों की चारदीवारी में स्वयं को सीमित करके धर्म गुरु या धर्म सेवक की उपाधि पाई। और कुछ लोगों ने दुन्या के बाज़ारों, कार्यालयों में परिश्रम करके स्वयं को दुन्यादार ही समझ लिया। परिणाम यह हुआ कि धर्म गुरु और धर्म सेवक भक्ति और साधना के अतिरिक्त किसी अन्य कार्य के योग्य न रहे। और दुनियादार कहा जाने वाला वर्ग ईश्वर की इच्छा, आदेश, सत्कर्म एवं विचारों की शुद्धता को छोड़ कर उसके प्रेम एवं प्रशंसा से वंचित हो गया।

अब पुनः हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के अनुयाइयों एवं समस्त संसार की मानव जाति के लिए अनिवार्य है कि वह धर्म और दुनिया के एकत्व के रहस्य को समझें, उसे स्थापित करें और अपनी शक्ति और विकास का आदर्श मार्ग स्वीकार करें।

❖❖❖

कुरआन की शिक्षा.....

8. हमेशा से साल बारह महीने का रहा है फिर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दीन में उनमें चार महीने आदर वाले थे ''ज़ीकदह, जिलहिज्जह, मुहर्रम और रजब उनमें लड़ना हराम था ताकि लोगों को हज के लिए आने जाने में भी कठिनाई न हो, यह आदर का आदेश अब अधिकतर उलमा के नज़दीक बाक़ी न रहा, काफ़िरों से जंग हर मौसम में जायज़ है, आपस में जुल्म करना हमेशा अवैध है, हाँ इन महीनों में इसकी कठोरता और बढ़ जाती है और यह भी बेहतर है कि अगर कोई काफ़िर क़ौम इन महीनों का आदर करती हो तो मुसलमान भी उनसे लड़ाई में पहल न करें।

❖❖❖

प्यारे नबी की प्यारी....

यह काम तेरी खुशी के लिए किया है तो हमें इस मुसीबत से छुटकारा दे, तो पत्थर खिसक गया मगर इतना कि निकल नहीं सके।

तीसरे ने कहाः ऐ अल्लाह! मैंने कुछ मजदूर काम के लिए बुलाए, और उनको पूरी–पूरी मज़दूरी दी, सिवाय एक आदमी के, वह मज़दूरी लिए बिना चला गया था, मैंने उसकी मज़दूरी से कारोबार किया, कुछ ही दिनों में खूब लाभ हुआ, एक दिन वह मज़दूर आया और कहा अल्लाह के बन्दे! मेरी मजदूरी दे, मैंने कहाः ये जितनी चीज़ें तुम देख रहे हो, ऊँट, गाय, बकरी, गुलाम, सब तुम्हारे हैं और तुम्हारी मज़दूरी से हैं, उसने कहा क्यों मुझ से मज़ाक करते हो, मैंने कहाः मैं मज़ाक नहीं करता, यह हकीकत है, तो वह सब कुछ ले कर चला गया, ऐ अल्लाह! अगर मेरी यह बात तुझे पसन्द आई हो तो हमको इस मुसीबत से छुटकारा दे, बस वह पत्थर हट गया और सब बाहर निकल आये। (बुखारी व मुस्लिम)

❖❖❖

हमारे वालिद साहब

अतिया सिद्दीक़ा

वालिद साहब नदवे में पढ़ाते थे तकरीबन 1978 की बात है, किसी बात पर उस्तादों में कशीदगी हो गई, वालिद साहब ने इस्तीफा दे दिया फिर बहुत परेशान थे, नदवे से इतना गहरा तअल्लुक़ जो था। मौलाना सानी साहब रहमतुल्लाह अलैहि ने तसल्ली दी उनके दफ़्तरी काम में लगे रहे, मौलाना अली मियाँ नदवी रह0 की किताब का काम भी करते रहे फिर शिया डिग्री कॉलेज, लखनऊ में पढ़ाना शुरु किया अचानक रियाज़ युनिवर्सिटी सऊदिया अरबिया से पढ़ने के लिए वीज़ा मिला खुशी के साथ हैरत भी थी आखिर वीज़ा किसने दिलाया, मौलाना अली मियाँ रह0 ने खुद बताया, मौलाना साहब ने कहा मुबारक हो ये तो क़िस्मत वालों को मिलता है। अल्लाह का नाम ले कर सफ़र कीजिए। घर के माली हालात कम सही थे लेकिन वालिद साहब ने खुदा पर भरोसा करके सफ़र किया सफ़र नामा वालिद साहब ने हमको लिख कर दिया, हमारे पूरे खानदान के लोगों ने बड़ी दिलचस्पी से सुना फिर अपने दोनों बेटों मतलूब अहमद और मौलाना मारुफ़ अहमद नीज़ अपने छोटे भाई मौलाना वसीम नदवी साहब के लिए भी कोशिश की इन तीनों को भी दाख़िला मिल गया सबने दो साल का कोर्स पूरा किया। वालिद साहब ने 5 साल में पी0एच0डी0 भी की फिर इन लोगों ने रियाज़ ही में जाब के लिए कोशिश की, वालिद साहब की ख़्वाहिश हुई कि यहीं रुक जायें मौलाना अली मियाँ रह0 ने कहा लोग अपने वतन से बाहर जाते हैं, तालीम हासिल करते हैं, डिग्रियाँ मिलती हैं, शोहरत होती है, ऐश व आराम भी खूब मिलता है, अपने वतन की ख़िदमत करना भूल जाते हैं। क्या ही अच्छा हो कि आदमी अपने वतन के लिए कुछ कुरबानियाँ पेश करे, और इसका अज्र अपने रब से चाहे। वालिद साहब ने कहा बेशक मैं ये कुरबानी पेश करूँगा दुनिया तो अल्लाह तआला दे देगा मेरी ये ख़िदमत अल्लाह कुबूल फ़रमाये, वे तन मन से दीन के काम में लग गये दुनिया की परवाह न की ज़ाहिर में दुनिया जितनी अल्लाह तआला ने लिखी थी वो तो मिल ही गई, अब अल्लाह तआला हमारे वालिद साहब को अपने अस्ली घर में आ़ला मुक़ाम अता फ़रमाये और हम सब भाई बहनों को नेक अमल करने की तौफ़ीक़ अता फरमाये! ◆◇◆

आमीन।

उर्दू सीखये —इदारा

नीचे लिखे उर्दू क़े जुमले पढिये,
मुश्किल आने पर बाद में लिखे हिन्दी जुमले से मदद लीजिए

رحمت کا مہینہ آنے والا ہے
برکت کا مہینہ آنے والا ہے
مغفرت کا مہینہ آنے والا ہے
تقویٰ کا مہینہ آنے والا ہے
صبر کا مہینہ آنے والا ہے
تلاوت کا مہینہ آنے والا ہے
تراویح کا مہینہ آنے والا ہے
جہنّم سے چھٹکارے کا مہینہ آنے والا ہے
اُس مہینے کا کیا نام ہے
اُس مہینے کا نام رمضان المبارک ہے

रहमत का महीना आने वाला है
बरकत का महीना आने वाला है
मग़फिरत का महीना आने वाला है
तक़्वे का महीना आने वाला है
सब्र का महीना आने वाला है
तिलावत का महीना आने वाला है
तरावीह का महीना आने वाला है
जहन्नम से छुटकारे का महीना आने वाला है
उस महीने का क्या नाम है
उस महीने का नाम रमज़ानुल मुबारक है

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳۔ ٹیگور مارگ
لکھنؤ۔ ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांक 25/12/2021 تاریخ _____

स्टॉफ़ क्वाटर्स की तामीर के लिए अपील

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा हज़रत मौलाना सैय्यद मो0 राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम, नाज़िम नदवतुल उलमा की सरपरस्ती में अपनी इल्मी व दीनी, तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंज़ाम दे रहा है, दारुल उलूम और उसकी ब्रांचों में इल्मी तालीमी सिलसिला बराबर जारी है, टीचर्स व स्टॉफ अपनी ज़िम्मेदारियों को अंजाम दे रहे हैं, टीचर्स व स्टॉफ की अधिकता की वजह से दारुलउलूम में उनके रहने की गुंजाइश नहीं रही तो दारुलउलूम के मेन कैम्पस के अलावा माहद सिकरौरी में स्टॉफ क्वाटर्स और माहद के करीब नदवा कालोनी की तीन मंज़िला बिल्ड़िंग तामीर हुई, मगर अब भी स्टॉफ के लिए क्वाटर्स की कमी बहुत ज़ियादा महसूस की जा रही है, इस सूरते हाल की वजह से नदवा मेन कैम्पस से करीब मुहल्ला मकारिम नगर में कुछ और स्टॉफ क्वाटर्स बनाने का फैसला किया गया है, और अल्लाह तआ़ला की मदद के भरोसे पर यह तामीर शुरु कर दी गयी है।

नये स्टॉफ क्वाटर्स की यह बिल्डिंग तीन मंजिला होगी, जिसमें 9 फेमली क्वाटर्स होंगे, इसकी तामीर पर 1,15,00000/– (एक करोड़ पंद्रह लाख) रूपये के खर्च का अंदाज़ा है, जो इंशाअल्लाह अहले खैर हज़रात के सहयोग से पूरा होगा।

हम उम्मीद करते हैं कि आप इस अहम ज़रूरत की ओर फौरन तवज्जोह फरमायेंगे और नदवतुल उलमा के कारकुनों का हाथ बटायेंगे।

हमें अल्लाह तआला की ज़ात पर पूरा भरोसा है कि उसकी मदद से यह काम मुकम्मल होगा।

मौलाना सै0 बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी
नाजिरे आ़म नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

डॉ0 मुहम्मद असलम सिद्दीक़ी
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम नदवतुल उलमा

नोटः चेक/ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें:
NADWATUL ULAMA
और इस पते पर भेजें:
NAZIM NADWATUL ULAMA
Nizamat Office, Nadwatul Ulama.
Tagore Marg, Lucknow-226007 (UP)

बरा–ए–करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं0 **7275265518** पर इत्तिला ज़रूर करें।

नदवतुल उलमा
STATE BANK OF INDIA MAIN BRANCH, LUCKNOW
(IFSC: SBIN0000125)
–:तअ़मीरः–
A/C No. 10863759733

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को **Section 80G income Tax act 1961**के तहत छूट प्राप्त होगी।
Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/ Website: www.madwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

RNI No. UPHIN/2002/0795
Regd. No. SSP/LW/NP-491/2021 To 2023
Dispatch Date :1 & 5
Published of 27th Advance Month
Dispatch: R.M.S Charbagh, Lucknow

MONTHLY
SACHCHA RAHI
Vol. 21 - Issue 01

Office Timing : 7:30 AM To 1:15PM
Tel.:(0522) 2740406
ISSN No. : 2582-4007
http://sachcha-rahi.nadwa.in
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com

RK JEWELLERS
Renowned Name in Jewellery

Haji Abdul Rauf Khan
Haji Mohd. Faheem Khan
Mohd. Owais Khan

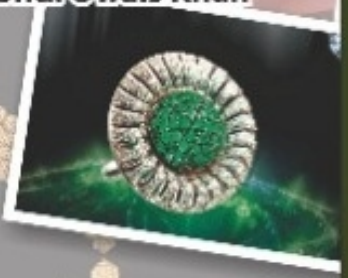

Shop : Sarai Bans, Akbari Gate,
Chowk, Lucknow - 226003
Ph.: 0522-2267910
+91-9415108039

R. K. CLINIC
& RESEARCH CENTRE

Dr. Mohammad Fahad Khan
M.D.

विशेषज्ञ

पेट एवं उदर रोग, श्वास एवं चेस्ट रोग, एण्ड्रोक्रायोनोलोजी एवं मधुमेह रोग

24 HOURS EMERGENCY SERVICES AVAILABLE

G-1, Aman Apartments, Chaupatiyan, Opp. Power House, Lucknow
Ph.: 0522-2651950, 9415006983